Fortnightly per copy Rs. 4/-
ओ३म्
03rd April 2021

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

नौजवान साथी ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र ने ली संन्यास की दीक्षा बने स्वामी आदित्यवेश

स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म के २०० वर्ष

२०२४ में पूरे होने तक

२०० संन्यासियों की फौज को तैय्यार करने का संकल्प

अनेक विसंगतियों व प्रतिकूल वातावरण के बावजूद

आर्य समाज के लिए समर्पित एक नौजवान ने

संन्यास की दीक्षा लेकर आर्य समाज में एक नया उत्साह भर दिया

निराशा के अंधकार को चीरकर उज्जवल भविष्य की राह बनाई दीक्षेन्द्र ने

२०२४ तक उत्साही नौजवान जो अपने आपको आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाना चाहते है जरूर इस ओर कदम उठाएं और स्वामी दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाएं ।

ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र को संन्यास दीक्षा लेते हुए स्वामी आर्यवेश जी साथ में स्वामी चन्द्रवेश जी व अन्य

ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र का भव्य संन्यास दीक्षा समारोह

आर्य जगत के तेजस्वी संन्यासी, महान नेता, युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के ८४वें जन्मदिवस के अवसर पर १३ मार्च २०२१ को स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली जिला रोहतक हरियाणा में आयोजित भव्य संन्यास दीक्षा समारोह में आर्य समाज के तेजस्वी, कर्मठ एवं समर्पित नवयुवक नेता सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान व मिशन आर्यावर्त न्यूज चैनल के निदेशक, हजारों युवकों के प्रेरणास्रोत ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी ने संन्यास की दीक्षा लेकर आर्य समाज में एक नये उत्साह का संचार कर दिया। दीक्षा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी। दीक्षा यज्ञ के ब्रह्मा वीतराग संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज तथा पौरोहित्य का दायित्व युवा विद्वान् डॉ. श्यामदेव जी ने संभाला। दीक्षा के उपरान्त दीक्षा गुरु स्वामी आर्यवेश जी ने उनका नया नाम स्वामी आदित्यवेश घोषित किया। दीक्षा का पूरा कार्यक्रम जहाँ उत्साह एवं उल्लास से ओत-प्रोत था वहीं कई क्षण अत्यन्त भावुकता प्रदर्शित करने वाले भी रहे। जब स्वामी आर्यवेश जी ने ब्र. दीक्षेन्द्र जी का अपने ओजस्वी शब्दों में उपस्थित जनसमूह के समक्ष परिचय प्रस्तुत किया और उनके इस त्याग को सर्वोच्च त्याग बताते हुए कहा कि -

संन्यास दीक्षा समारोह के बाद स्वामी आदित्यवेश (ब्र. दीक्षेन्द्र) सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठल राव एवं प्रधान स्वामी आर्यवेशजी व अन्य के साथ

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर।
हमें भी पाला था माँ-बाप ने दुःख सह-सहकर।
वक्ते रूखसत इतना भी न आये कहकर, आंख से आंसू जब आये बहकर, तिफ्ल उन्हें ही समझ लेना जी बहलाने को।। ये पंक्तियाँ बोलकर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि ब्रदीक्ष् िन्द्र आर्य जी, जो बचपन से ही एक स्वाभिमानी, निष्ठावान, चरित्रवान, तपस्वी एवं समर्पित व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन की समस्त सुख-सुविधाएं, ऐश्वर्य एवं अवसरों को ठुकराकर महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का संकल्प लेकर एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। उनके संन्यास दीक्षा के इस निर्णय से समूचे आर्य जगत में नई ऊर्जा एवं उत्साह की लहर दौड़ गई है। अनेक नौजवान संन्यास लेने के लिए प्रेरित हुए हैं और आशा की एक नई किरण उनके संन्यास दीक्षा से आर्य जगत में प्रस्फुटित हुई है। स्वामी आर्यवेश जी के भावपूर्ण विचारों को सुनकर और ब्र. दीक्षेन्द्र जी के भावुकता भरे वक्तव्य को सुनकर उपस्थित जन-समूह की आंखें सजल हो रही थीं। लोग उन्हें अपनी शुभकामनाएं देने के लिए उमड़ रहे थे। भिक्षा के लिए जब नव-दीक्षित संन्यासी अपने हाथ में दंड और कमंडल लेकर लोगों के समक्ष पहुँचे तो लाखों रुपये उनकी झोली में डालकर आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए उन्हें अपना सात्विक सहयोग एवं विश्वास प्रदान किया। इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी को अपनी शुभकामनाएं तथा आशीर्वाद प्रदान करने के लिए

ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र का भव्य संन्यास दीक्षा समारोह

आर्य जगत् के अनेक संन्यासी, विद्वान्, नेता एवं जनप्रतिनिधि दीक्षा समारोह में पहुँचे। मुख्यरूप से आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज, पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज अध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल एवं अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्, स्वामी रामवेश जी महाराज अध्यक्ष नशाबन्दी परिषद् हरियाणा, स्वामी ओमवेश जी महाराज पूर्व गन्ना मंत्री उत्तर प्रदेश आदि ।

संन्यास दीक्षा समारोह में बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठल राव आर्य ।
मंच पर स्वामी आदित्यवेश (ब्र. दीक्षेन्द्र) स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी सम्पूर्णानन्द जी व पं. श्यामदेव जी ।

तथा प्रो. विठ्ठलराव आर्य मंत्री सार्वदेशिक सभा, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, वैद्य सत्य प्रकाश आर्य नाड़ी वैद्य कायाकल्प रोहतक, प्रसिद्ध युवा समाजसेवी श्री विशाल मलिक चण्डीगढ़, चै. हरिसिंह सैनी पूर्वमंत्री हरियाणा सरकार प्रधान आर्य समाज हिसार, डॉ. महावीर मीमांसक दिल्ली, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या, माता मूर्तिदेवी आर्या व माता वीरमति आर्या, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट, चै. अजीत सिंह एडवोकेट पूर्व विधायक झज्जर, श्री राममोहन राय एडवोकेट मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री अरविन्द मेहता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुर भाषिणी मेहता दीनानगर, पंजाब, श्री सुरेशपाल सिंह अहलावत शिकागो अमेरिकाआदि ।

व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के व्यायामाचार्य ब्रं सहसरपाल आर्य, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कोषाध्यक्ष श्री विष्णु पाल आदि ने स्वामी आदित्यवेश जी को अपनी शुभकामनाएँ अर्पित की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से सैंकड़ो युवाओं ने अपना जीवन आर्य समाज के लिए समर्पित किया है। उन्होंने युवक क्रांति अभियान चला कर आर्य समाज को नवजीवन प्रदान किया था। आर्य समाज स्वामी दयानंद जी की २००वीं जयंती तक २०० आर्य संन्यासी तैयार करेगा। आज ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने भी इसी कड़ी में अपने आपको समर्पित किया है। यह इस श्रृंखला का शुभारंभ एवं पहली आहुति है। अपने प्रवचन में उन्होंने कहा कि आर्य समाज देश को पुनः विश्व गुरु बनाने की कला जानता है। महर्षि दयानंद ने वेदों की पुनर्स्थापना के लिए आजीवन प्रयास किया। इन्हीं कार्यों को गति देने के लिए इस तरह का सहयोग आगे भी जारी रहेगा। इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने संन्यास दीक्षा ग्रहण करने के उपरान्त सभी वरिष्ठ संन्यासियों का धन्यवाद अर्पित करते हुए कहा कि अपने गुरुओं की भावनाओं का आदर करते हुए स्वामी दयानंद की मान्यताओं, वेद के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे।

सुख, शान्ति और समृद्धियों का आधार सत्य

डॉ. अशोक आर्य

मानव जीवन में मनुष्य सदा से ही सुखों की खोज करता रहा है । प्रत्येक व्यक्ति सुखप्राप्ति के लिए इधर-उधर भटकता रहता है, किन्तु सुख उसे कुछ भी नहीं मिलता । क्या कारण है कि जिस सुख को पाने के लिए वह अनेक स्थानों पर भटक रहा है, नदियों, नालों, पर्वतों व जंगलों की खाक छान रहा है किन्तु सुख उसे तो भी नहीं पा रहा अपितु वह जितना सुख के पीछे भाग रहा है, सुख उससे उतना ही दूर जा रहा है । क्या कारण है ? जब हम इस दूरी का कारण खोजने का प्रयास करते हैं, तो हमें पता चलता है कि जिस सुख को हम खोजने के लिए इधर-उधर भटक रहे हैं, वह सुख कोई खोजने से मिलने वाली वस्तु नहीं है । सुख तो प्रयास से अर्जित होती है । इसे पाने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है । यदि हम अपने जीवन में काम ऐसे करें जिन से दुःख ही दुःख मिले तो सुख की कामना मात्र से क्या होगा ? जबकि हमने सुख प्राप्ति का कार्य तो कोई किया ही नहीं । जब तक हम सुख पाने के लिए पुरुषार्थ नहीं करेंगे, तब तक तोते की भान्ति चाहे सुख-सुख शब्द की जितनी चाहे पाला फेर लें, कुछ होने वाला नहीं है । परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में मानव मात्र के कल्याण के लिए चार वेदों का ज्ञान दिया है । इस ज्ञान में सुख प्राप्ति को मूल मन्त्र दिया है । वेदों में जब तत्र ऐसे अनेक मन्त्र मिलते हैं, जिनसे मार्गदर्शन पाकर हम सच्चे सुख को पाने की सिद्धि पा सकते हैं । अतः आओ हम वेद से ऐसे मन्त्रों को कोजकर सच्चे सुख को पाने का मार्ग प्राप्त करने का प्रयास करें । इस मार्ग से सफलता निश्चित रूप से मिलेगी ।

वेद में सुख, समृद्धि व धन-ऐश्वर्य का साधन सत्य को बताया है, सत्य पर ही संसार टिका है । सत्य ही संसार का आधार है । सत्य नहीं तो कुछ बी नहीं । अथर्ववेद के मन्त्र १४.१.१ में इस तथ्य की ओर ही इंगित करते हुए इस प्रकार कहा है-

सत्येनात्तभिता भूमिः सूर्येनोत्तभिता द्यौः । ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः ॥ -अथर्व. १४.१.१

इस मन्त्र में सत्य की अत्यन्त मार्मिक व्याख्या करते हुए कहा है कि यह सत्य ही है जिस पर यह पृथ्वी टिकी है । इतना ही नहीं सूर्य से द्युलोक टिका है । किन्तु सूर्य को टिकने का कुछ तो आधार चाहिए ही, अन्यथा वह कैसे टिक पावेगा ? वेद इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता है कि यह भी सत्य ही है कि जिस पर सूर्य टिका है । सत्य अर्थात् सोमगुण से भरपूर वह परमात्मा द्युलोक में व्याप्त है । अतः यह सत्य ही है जो पृथ्वी का आधार है, विश्वास है, इसी से ही प्रेम का बीज अंकुरित होता है । इस सत्य से ही मनुष्य दृढ़ बनता है तथा सर्वत्र विश्वास व सफलता अर्जित करता है । जब हम सोम को प्राप्त करते हैं तो हम पाते हैं कि यह भी सत्य का ही आनन्द स्वरूप है । सत्य ही सब प्रकारके ज्ञान का केन्द्र है । इस प्रकार वेदमन्त्र हमें बताता है कि जब सत्य ही सब कुछ हमें दे सकता है तो हम इस सत्य को क्यों न अपनाएँ ?

ऋग्वेद ने तो सत्य को अव प्रकार से सुखों का आधार बताते हुए इस प्रकार कहा हैं-

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु, शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः । शं न सत्यस्य सुयमस्य शंसः, शं नो अर्य्यमा पुरुजातो अस्तु ॥ -ऋ. ७.३५.२

इस मन्त्र में हमारे कल्याण व सुख समृद्धि, कीर्ति व ऐश्वर्य की कामना करते हुए कहा है कि यह सब हमारे लिए सुखदायी हों । सत्य व संयम तो हमारे लिए सुखदायी हों ही, इसके साथ ही साथ न्याय व उदारता का देवता, जो अर्यमा के नाम से जाना जाता है, वह भी हमें सुख देने का साधन बने ।

इससे आगे चलकर इस मन्त्रके माध्यम से हम पुनः परमपिता से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु ! सत्य के रक्षक जितने भी देवगण हैं, वह सब हमारे लिए कल्याण के कार्य करें । यह ऋग्वेद का ७.३५.१२ मन्त्र है, जो इस प्रकार है-

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु, शं नो अर्वन्तः शमु सन्तुगावः । शं नः ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः, शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥

जो देवता सत्य के रक्षक हैं, वह सब हमारे लिए कल्याणकारी हों । हे प्रभु ! हमारे यह घोड़े तथा गायें भी हमारा शुभ करने वाली हों, हमारा कल्याण करने वाली हों । सत्यकामों में सदा रत रहने वाले कर्मशील, सिद्धहस्त शिल्पी गण हमारे लिए सुखदायक शिल्प के कार्य करते रहें । हमारे पितृगण सब यज्ञों में हमें सुख दें । इस प्रकार यह मन्त्र इस बात को स्पष्ट करता है कि जीवन में सत्य के साथ ही साथ पुरुषार्थ की भी आवश्यकता होती है । शिल्प से आत्मनिर्भरता आती है, जो सुख का साधन है । अतः जीवन में सत्य व सत्कर्म को आधार बनाते हुए शिल्प अर्थात् पुरुषार्थ द्वारा विशेष योग्यता अर्जित कर आजीविका के साधनों को बढ़ाना ही सत्य की उपयोगिता है ।

वेद कहता है कि जब हमारा जीवन सत्य व संयम पर आचरण करते हुए कार्य करेगा तो हमें सब और से सुख व शान्ति मिलेगी । यह तथ्य ऋग्वेद के मन्त्र ७.३५.२ में स्पष्ट किया गया है । मूल मन्त्र इस प्रकार है-

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु, शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः । शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः, शं नो अर्य्यमा पुरुजातो अस्तु ॥ -ऋ. ७.३५.२

इस मन्त्र से प्रभु से हमारे लिए कल्याण की कामना करते हुए कहा है कि हे प्रभु ! ऐश्वर्य की देवता भी हमारे लिए कल्याणकारी हो कीर्ति अथवा यश, धन या ऐश्वर्य तथा समृद्धि भी हमें सुख देने वाली हो । सत्य व संशय की प्रशंसा भी हमें सुख व कल्याणकारी हो । उदारता जिसे हम न्याय का अंग मानते हुए देव अर्यमा के नाम से जानते हैं, वह भी हमें सुख देने वाला हो ।

भाव यह है कि प्रत्येक मनुष्य सुख व शान्ति का अभिलाषी होता है । अतः वह सदा वही साध अपनाता है जिससे सुख व शान्ति मिले । ऐसे साधनों में एक है सत्य, इससे जीवन में स्थिरता का प्रकाश होता है । इससे मानव में उदारता जागृत होती है । उदारता जागृत होने से सद्भावना की वृद्धि होती है । अब संयम अपनाने से जितेन्द्रियता आती है, जो शक्तियों को संयमित कर तेजस्विता पैदा करती है । इससे हम उन्नति व विकास के मार्ग पर अग्रसर होते हैं, जीवन का नवनिर्माण होता है ।

इस प्रकार वेद के मन्त्र में बताया गया है कि सत्य पर आधारित संयम से सुख, शान्ति व सब प्रकार की समृद्धियाँ मिलती हैं क्योंकि सत्य सब संसार का आधार है । सत्य पर चलने से हम संयमी बनते हैं तथा सब प्रकार के दुःखों से छुट जाते हैं, सत्य से हमें प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है । सत्यशील के देवता भी सहयोगी बन जाते हैं तथा यही भाव सागर से पार उतरने का उत्तम साधन है । जिस सत्य के इतने लाभ, इतने गुण हैं, उसे अपनाने में हमें सदा खुश होना चाहिए, सत्यव्रती बनना चाहिए सफलता निश्चय ही मिलेगी ।

मन की पवित्रता का महत्व

- आचार्य अनिल शास्त्री

वैदिक सद्ज्ञान ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमूल्य संपदा है । सृष्टि के आदि में परमात्मा ने संसार के उपकार हेतु अटल संविधान के रूप में मानवमात्र के लिए वेदों को प्रकाशित किया । वेद मंत्र ईश्वरोक्त होने के कारण स्वतः परम प्रमाण माने जाते हैं । प्रस्तुत मंत्र द्वारा कुटिलतायुक्त पाप कर्म से बचने का संदेश ज्ञात होता है और पुण्य कर्म करने की सतत् प्रेरणा मिलती है । आइए ! हम भी मनन करें और पुण्य के भागीदार बनें ।

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥

अग्ने नय सुपथा राये-है प्रकाशस्वरूप अग्निदेव ! हमें भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सुपथ से चला ।

अग्नि शब्द (अञ्जु व्यक्ति म्रक्षणकान्ति गतिषु) धातु से सिद्ध होता है । यहां 'अञ्ज' का एक अर्थ होना, प्रकाशित होना भी है । अग्नि प्रकाशक होने के कारण ज्ञानस्वरूप भी है ।

'राये' शब्द 'रा दाने' धातु से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है- धन । वैदिक निघंटु २/१० में इसे धन का वाचक माना गया है । धन अनेक प्रकार का है । यहां इस शब्द का प्रयोग सांसारिक ऐश्वर्य और परब्रह्म परमात्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

हे अग्निदेव ! हमें सुपथ से चलाओ । प्रभो ! हमारे जीवन के लिए भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही ऐश्वर्यों की आवश्यकता है । भौतिक ऐश्वर्यों के अभाव में हमारा इहलौकिक जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा और आध्यात्मिक ऐश्वर्य के अभाव में हमारा जीवन व्यर्थ हो जाएगा । हमें दोनों ऐश्वर्य चाहिए और उनके लिए हमें आप ही सुपथ पर चला सकते हैं ।

वेदों में अनेक जगह सुमार्ग पर चलने के लिए भगवान से प्रार्थना की गई है-हे ऐश्वर्यसम्पन्न प्रभो ! आप सब-कुछ जानते हैं, अतः लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आप हमें दिशाओं का उपदेश करें । हे शक्तियों के स्वामिन् ! हे समस्त प्रजाओं के भीतर बसने और उनको बसाने वाले परमात्मन् ! हमें शिक्षा दो, सुमार्ग पर चलने का उपदेश दो ।

प्रभो ! हमे सुपथ पर चलाओ । हम ईमानदारी और परिश्रम से धन का उपार्जन करें । हम दूसरों का शोषण करके धन प्राप्त न करें । हम वैज्ञानिक आविष्कार करें, परंतु वे दूसरों की हानि के लिए न होकर दूसरों के कल्याण के लिए हों ।

हमारा अंतिम जीवन-लक्ष्य तो आपकी प्रभु की प्राप्ति है । अपनी प्राप्ति के लिए भी हमें सुपथ से चलाइए । आज ईश्वर-प्राप्ति के लिए भी स्थान-स्थान पर, गली और मोहल्लों में दुकानें खुली हुई हैं । ईश्वर के नाम पर विभिन्न संप्रदाय लोगों को अपने जाल में फंसाने के प्रयत्न में लगे हुए हैं । प्रभो ! सुपथ क्या है, ठीक मार्ग कौन-सा है, आपकी प्राप्ति कैसे हो सकती है, इसका भी ठीक-ठीक ज्ञान तो आप ही दे सकते हैं, अतः जहां हम भूलने लगें, जहां भटक जाएं वहां ही अपनी सुप्रेरणा द्वारा प्रेरित करके हमें सुमार्ग पर चलाएं आप ।

> **अग्नि पावक है, शोधक है । जैसे सुवर्ण को अग्नि में तपाकर उसके मलों को शुद्ध कर उसे दिव्य कुन्दन बनाया जाता है, उसी प्रकार हृदय के सच्चे पश्चाताप से, अन्तर्दाह से पापरूपी मल धुलकर हृदय शुद्ध, पवित्र और निर्मल हो जाता है । मल, विक्षेप और आवरण हट जाता है, चित्त शुद्ध हो जाता है । वासना की मैल हटकर आत्मा दिव्य-कुन्दन की भांति चमकने लगता है । विनय, भक्ति और श्रद्धा साधक की साधना के प्रमुख अंग हैं । भक्ति और श्रद्धा से विलग होकर हृदय सूख जाता है । विनम्रता के बिना ज्ञान की प्राप्ति भी नहीं होती । साधक की विनम्रता, परिश्रम और सेवा से परितुष्ट होकर ही तत्वदर्शी गुरु ज्ञानका उपदेश करते हैं ।**

विश्वानि देव वयुनानि विद्वान-प्रभो ! आप हमारे सम्पूर्ण शुभ और अशुभकर्मों और संकल्पों को जानते है । आप तो जातवेदः हैं । हमारे इस जन्म के ही नहीं जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों को जानते हैं । जब भी हम कुमार्ग पर चलने लगें, जब भी खोटे विचार मन में उठने लगें, तभी आप हमें सावधान और सचेत कर दें, हमारी बुद्धि को ऐसी सुप्रेरणा दें कि हम संसार के पदार्थों का त्यागपूर्वक ही भोग करें, सदा कर्मशील बने रहें, आत्महन् न बनें, सभी प्राणियों में सर्वात्माका ही दर्शन करें, सृष्टिविद्या और आत्मविद्या, व्यक्तिवाद और समाजवाद का समन्वय करते हुए ही अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें ।

युयोध्यस्मज्जुहराणमेनः हमसे कुटिलतायुक्त पाप को दूरकर दीजिए । अग्नि का स्वभाव है, भस्म करना, जलाना, अतः यहां परमात्मा से प्रार्थना की गई है- 'अग्निदेव ! हमारी कुटिलता और टेढ़ेपन को हमसे दूर कर दीजिए ।'

यहां 'एन' पाप का एक विश्लेषण दिया हुआ है 'जुहुराणम्' कुटिलतायुक्त । यह पाप बहुत कुटिल होता है । यह मनुष्य पर कब और कैसे आक्रमण कर दे, इसका पता नहीं लगता । लीजिए कुटिलतायुक्त पाप के संबंध में एक मनोरंजक घटना पढ़िए-

गौरवपूर्ण भारत देश के वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज एक वकील महोदय के यहां बैठे हुए थे । वार्तालाप करते हुए वकील महोदय कहने लगे- 'स्वामीजी ! कमरा गंदा हो रहा हो यदि उसमें झाड़ू लगाकर सफाई कर दी जाए तो अच्छा है या बुरा ।'

स्वामी जी ने कहा- 'यह तो अच्छा ही है ।' वकील महोदय फिर बोले- 'कपड़े गंदे हो रहे है, साबुन लगाकर धो दिए जाएं तो अच्छा है या बुरा ।'

स्वामीजी ने उत्तर दिया- 'कपड़े को धोना भी अच्छा ही है ।' वकील महोदय ने पुनः प्रश्न किया-

'स्वामीजी ! एक बच्चा मैला हो रहा है, माता उसका हाथ मुंह धोकर उत्तम वस्त्र पहना दे तो कार्य अच्छा है या बुरा ।'

स्वामीजी बोले- 'यह कार्य तो अच्छा है परंतु प्रतीत होता है कि आज तुम्हारा मस्तिष्क

-शेष पृ.८ पर

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

नारी उत्पीड़न एवं आर्य समाज

-आजाद सिंह बांगड़

विश्वभर में ८ मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है जो मानव जीवन में महिलाओं के अस्तित्व, वर्चस्व और गरिमा को रेखांकित ही नहीं करता बल्कि स्वीकारता भी है लेकिन जिस प्रकार महिला दिवस को मनाया जाता है उसे रस्म अदायगी या औपचारिकता की खानापूर्ति से अधिक कुछ भी नहीं माना जा सकता। महिला दिवस पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिका महिलाओं के बारे में बहुत सारी सामग्री प्रस्तुत करती हैं। जिसमें दर्शाया जाता है कि अमुक महिला ने ये पद या स्थान स्थिति प्राप्त की है। पीठ थपथपाने, प्रशंसा करने में इतने लग्नशील हो जाते हैं कि इन करोड़ों महिलाओं के बारे में भूल जाते हैं जो आज भी धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों और आर्थिक मजबुरियों का शिकार होकर अपनी गरिमा को सरेआम लुटता देख कर खून के आंसु भी लेती हैं और किसी को खबर तक नहीं लगती। कुछ शीर्ष महिलाओं को अपवाद मानकर यदि समूचे महिला समाज पर दृष्टिपात करें तो परिणाम नकारात्मक ही सामने आएगा, इन स्थिति में ये सारे दावे झूठे हो जाते हैं। जिसमें कहा जाता है कि महिलाओं को भी वो ही समानता, न्याय, स्वतन्त्रता प्राप्त है जो पुरुषों को प्राप्त है। इन दावों का विश्लेषण करके यदि महिला दिवस मनाया जाए तो सार्थक रहेगा।

यहां पर हमें समानता, न्याय और स्वतंत्रता के आधार पर ही चर्चा करनी चाहिए। यदि नारी को वास्तव में समानता का दर्जा प्राप्त है तो प्रश्न उठता है कि हर वर्ष लाखों कन्या भ्रूण हत्याएं इस देश में क्यों हो रही हैं? इस्लाम ने एक पुरुष को चार औरतें रखने की छूट क्यों दे रखी है? ईसाईयत आज भी नारी नारी को बिना रूह व आत्मा का प्राणी क्यों मानते हैं?

शरियत में आज भी महिला की आधी गवाही क्यों माना जाता है? मंदिर, मजिस्द, गिरजाघर, मठों में पुजारी, इमाम, पादरी, महंत के पद पर पुरुषों का वर्चस्व सदियों से क्यों चला आ रहा है? बुर्के व परदे महिलाएं क्यों पहनती हैं? सती प्रथा का अत्याचार पुरुषों पर क्यों नहीं? पुरुष पर पुनर्विवाह का प्रतिबन्ध क्यों नहीं? आधी आबादी का भाग होते हुए भी महिला पंचायत, विधान सभा, संसद में आधा भाग क्यों नहीं? सरकारी सेवाओं में भी आधा भाग क्यों नहीं? नारी को वेदमंत्रों के पठन-पाठन का अधिकार क्यों नहीं? नारी को नरक का द्वारा क्यों माना जाता है? उसे ताड़ना का ही पात्र क्यों माना गया? नारी को मर्द की खेती क्यों कहा गया? देवदासी प्रथा, दहेज प्रथा, कन्या बाल विवाह, बलातकार, यौन उत्पीड़न, तलाक पुरुष निरंकुशता, सम्पत्ति में भागीदारी न होना से सब महिलाओं के खाते में क्यों है? जिस समाज में नारी पुरुष पर आश्रित हो और उसकी पहचान पुरुष गोत्र से हो तो उस समाज में समानता का अर्थ कितना रह जाता है?

कानून की दृष्टि में नर-नारी समान हैं लेकिन न्यायाधीश और अदालत को विधि संहिताओं के अन्तर्गत ही फैसला लेना होता है और विधि संहिताओं के निर्माता पुरुष रहे हैं महिलाएं नहीं। इसलिए विधि संहिताएं महिलाओं के बारे में पूरी तरह खुद प्राकृतिक न्याय पर आधारित नहीं है। पाकिस्तान में महिला कैदियों मे से ८० प्रतिशत महिलाएं ऐसी हैं जो अपने ऊपर हुए बलातकार को सिद्ध न कर पाने के कारण जेल में बंद हैं। क्योंकि वहां के कानून में ऐसी ही व्यवस्था है। स्वाधीन भारत में भी महिलाओं को न्याय व सुरक्षा दिलाने के लिए २५-३० बार नए कानून व अधिनियम बनाने पड़े जिससे मालूम होता है कि कानून व्यवस्था में कुछ कमी थी।

अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन की पुस्तक आर्गुमेंटेटिव इंडियन के आधार पर उत्तरजीविता की समानता, घरेलू लाभ या कार्यों में असमान हिस्सा, घरेलू हिंसा या अत्याचार के भेद जानते हुए नारी पर उत्पीड़न हो रहा है। इन्हें आधार मानते हुए आकलन किया जाता है कि कानून को साक्षी आधारित बनाना होगा। न्यूनताएं और अक्षमताओं के कारण न्यायीक प्रणाली द्वारा पूर्ण न्याय नहीं मिल पाता। जब पुलिस, गवाह, वकील और अदालत तक की आंखे धन से चौंधियां जाती हैं तो कानून को वे अपने सुराख बंद करने होंगे, जिनमें से अपराधी बच कर निकल भागता है। ऐसी स्थिति आने पर महिला को न्याय मिल सकता है।

परमपरावादी या रूढ़िवादी समाजों में आज भी नारी दूसरे दर्जे की हैसियत प्राप्त है। युगल प्रेमियों के मामले में पंचायते खापें जो आज निर्णय ले रही है उससे यह बात निकल कर आ रही है कि लड़कियों को आजादी देने से पथ भ्रष्ट होने की सम्भावना बलवती होती है। टी.वी., अश्लील पुस्तकें जो वातावरण तैयार कर रही हैं उससे सामाजिक मर्यादा, पारिवारिक यश और चारित्रिक गरिमा पर आघात करने वाली कोई भी घटना इस परम्परागत समाज में घुट जाती है तो एक तान खड़ा हो जाता है और औरतों के लिए स्वतंत्रता का दायरा सीमित हो जाता है। विशेषकर यदि ऐसा घटना में दोनों एक ही जाति के ना होकर अलग-अलग जाति या सम्प्रदाय के हो तो तब स्थिति और अधिक बिगड़ जाती है।

-शेष पृ. ८ पर

ओ३म् का जाप और स्वास्थ्य विज्ञान

आचार्य पं. विभुमित्र शास्त्री

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" के प्रारम्भ में लिखा है कि "ओ३म्" यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्य गर्भ, वायु और तेजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्रज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है।" वेदों और शास्त्रों में भी ओ३म् नाम की महिमा वर्णित है। वेद में "ओ३म् एवं ब्रह्म" वाक्य आया है, अर्थात् परमात्मा का नाम ओ३म् है। वह आकाश की तरह व्यापक है। ओ३म् सार्थक शब्द है, जो रक्षा करता है, उसे ओ३म् कहते हैं-अवतीत्योम्। छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि "ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नहीं- **"ओमित्येतदक्षरमुद्गीथ मुपासीत।"**

योगदर्शन में इसी ओ३म् नाम को "प्रणव" (ओंकार) कहा गया है- "तस्य वाचकः प्रणः"। श्रीमद् भगवद् गीता में ओ३म् नाम की महिमा वर्णित है :-

ओंतत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मतः। ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिता पुरा॥ तस्मादोमित्थु दाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः॥ प्रवर्तन्ते विधानोक्ता सततं ब्रह्मवादिनाम्॥

नाम और नामी का सम्बंध अनादि और घनिष्ठ है। इसी कारण शास्त्रों में नाम जप की बड़ी महिमा है। योग शास्त्र में "तज्जपः पदर्थ भावनम्" कहा गया है, जिसका अर्थ है प्रणव अर्थात् ओ३म् का जप और उसके सार्थक स्वरूप का चिन्तन करना। ईश्वर स्वरूप को बार-बार आव त्ति करना ही जप है। जप ईश्वर प्रणिधान का साधन है- क्योंकि चंचल मन की एकाग्रता करने में सहायक है और इससे मानसिक शुद्धि होती है। इसलिए मनुस्म ति में जप यज्ञ को विधि यज्ञ से दस गुणा श्रष्ठ कहा गया है- "विधि यज्ञाज्जप यज्ञो विशिष्टों दसभिर्गुणैः।" महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की साधना में जप को प्रथम स्थान दिया है- "अनेन जपोपासनादि कर्मणा धमार्थ काम मोक्षाणा सधः सिद्धिर्भवेन्नः"। पूर्व के आर्यजन भजन गाते हुए कहते थे कि

ओ३म् के जप से हमारा ध्यान बढ़ता याएगा। अन्त में यह जाप हमको मुक्ति तक पहुँचाएगा।"

इस ओ३म् जाप को अब आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से ही नहीं अपितु शारीरिक स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से भी देखा जा रहा है। मेडिकल साइंस अब उन बीमारियों का इलाज ढूँढ रहा है-जिससे आधुनिक दवाएँ हार चुकी है। विज्ञान पत्रिका 'साइंस' में अभीहाल ही में एक शोध प्रकाशित हुआ है, जिसमें कहा गया है कि ओ३म् एक ऐसा शब्द है, जिसका अलग-अलग आवृत्तियों से रक्तचाप, दिल दिमाग, पेट और खून से जुड़ी हुई कई बीमारियों के इलाज में चमत्कारिक असर दिखा सकता है। यहाँ तक कि सेरीब्रल पैल्सी-जैसी असाध्य बीमारी में भी ओ३म् के उच्चारण से उपचार की संभावना बढ़ सकती है। दिल और दिमाग के रोगियों पर किए गए परीक्षण के विषय में उक्त पत्रिका में उल्लेख है कि रिसर्च एण्ड एक्सपेरिमेन्ट इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो सांइसेज के एक दल ने उक्त रोगों के विषय में शोध किया है और बहुत कुछ नई जानकारी प्राप्त की है। दल के प्रमुख प्रोफेसर जे. मॉर्गन के अनुसार उनके दल ने सात साल तक दिल और दिमाग के रोगियों पर परीक्षण किया और परीक्षण में देखा गया कि ओ३म् का अलग-अलग आवृत्तियों में और ध्वनियों में नियमित रूप से किया गया जाप काफी असरकारी है। ओम् का उच्चारण पेट, सीने और मस्तिष्क में एक कंपन पैदा करता है, जो शरीर की मृत कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होता है। ओ३म् का जप मस्तिष्क से लेकर नाक गला, फेफड़े तक के हिस्से से बडी तेज तरंगों का वैज्ञानिक रूप से संचार करता है।" परीक्षण के लिए मस्तिष्क और हृदय के विभिन्न रोगों से ग्रस्त २५०० पुरुषों और २००० महिलाओं को चुना गया, जिसमें से कुछ लोग बीमारी के अन्तिम चरण में पहुँच चुके थे। प्रो. मॉर्गन की टीम ने धीरे-धीरे उन लोगों को मिलने वाली बाकी दवाइयों को बंद कर वही दवाएँ जारी रखी जो जीवन बचाने के लिए जरूरी थीं। परिणाम चौंकाने वाला था। डॉक्टरी निरीक्षण में उक्त रोगियों ने प्रतिदिन सुबह छह से सात बजे तक एक घंटे तक विभिन्न आवृत्तियों में ओ३म् का जाप किया। इसके लिए योग्य प्रशिक्षक भी रखे गए। हर तीन माह पर इन लोगों का शारीरिक परीक्षण करवाया गया। चार साल बाद सामने आए परिणाम आश्चर्य जनक थे। ७० फीसदी पुरुष और ८५ फीसदी महिलाओं को नब्बे फीसदी राहत मिली। प्रतिदिन ओ३म् के उच्चारण से अधि संख्यक रोगियों के स्वास्थ्य में काफी सुधार एवं दवाओं का असर भी बढ़ा।

ओम् का पहला जिक्र वेदों में मिलता है और ब्रह्माण्ड का कारण माना जाता है- "ओं खं ब्रह्म"। भगवद गीता में इसी प्रणव (ओ३म्) को मनुष्यों के शरीराकाश में भी व्याप्त माना गया है- "प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं न षु"। शरीराकाश से ही विभिन्न ध्वनियों का तथा प्रामाण, अपान, व्यान, उदान, समान-जैसे पंच प्राणों का संचरण होता है-जो स्वास्थ्य और आयु का कारण बनता है। इन पंक्तियों का लेखक स्वयं हृदय रोगग्रस्त है और पटना स्थित इन्दिरा कार्डियोलोजी हॉस्पिटल में सप्ताहों भर्ती रहा। वहाँके निदेशक डॉ. एस.एन. मिश्रा ने तत्रत्य डॉक्टरों से कई प्रकार की जांच करायी, कई बार ई.सी.जी. हुई और "इको" के द्वारा हृदय की रक्त धमनियों की सही स्थिति की जानकारी ली गई। वह स्क्रीन पर भी दिखायी गई-जिसे मैंने स्वयं और डॉक्टरों की टीम के साथ वही कार्य करने वाली मेरी बड़ी पुत्री प्रतिभा कुमारी ने भी साश्रुनयनों से देखा और सब कुछ देखकर डॉक्टरों के विचार से निदेशक ने सिरयस्ली समझ कर कारोनरी बायपास सर्जरी के लिए दिल्ली के अपोलो अस्पताल में रेफर कर दिया और कहा कि यहां जो भी इलाज संभव था किया गया। आप दिल्ली जाएं। मैं अपनी शारीरिक और आर्थिक स्थिति से लाचार होकर चिकित्सार्थ दिल्ली न जा सका और अपने स्वाध्याय तथा स्वामी रामदेव जी से प्रेरणा पाकर ओ३म् जाप और प्राणायाम करने की ओर अग्रसर हुआ।

...पृ. ५ का शेष

...पृ.६ का शेष

आज छहसाल से अपने सरस्वती भवन स्थित यज्ञशाला में बैठकर तथा कभी काल एकान्त नदी तट पर बैठ कर ओ३म् जप के साथ प्राणायाम करता आ रहा हूँ और अब बहुत कुछ स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर चुका हूँ । इस बीच मेरा ध्यान मनुस्मृति के उस श्लोक की ओर भी गया जिसमें जाप के साथ तीन महाव्याहृतियों का उल्लेख है- ''एतदक्षरमेतांच जपन् व्याहृति पूर्विकाम् ।'' मैंने व्याहृतियों के साथ ओ३म् का जप और प्राणायाम करना शुरू किया और लाभ संतोषप्रद रहा । वस्तुतः तीन अक्षरों वाले ओम् (अ+उ+म्) के साथ तीन महा व्याहृतियाँ (भूः, भुवः, स्वः) का जप भी यदि प्राणायाम के साथ होता है, तो निश्चित ही प्राणापानादि शारीरिक वायु के संचरण से स्वास्थ्य में सुधार होता है । महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी संध्या की पुस्तक में इसीलिए प्राणायाम के मन्त्रों में महाव्याहृतियों का उल्लेख किया है, जो वैज्ञानिक सूझ है ।

इस ओ३म् शब्द को लोग ओम्, ओ३म् (प्लुत) और तान्त्रिक या यौगिक रूप में लघुरूप देकर ऊँ के रूप में भी लिखते हैं । योगिक प्रक्रिया में जाकर वस्तुतः ओ३म् शब्द एकाक्षरी हो जाता है । शायद इसीलिए गीता में इसे एकाक्षरी कहागया है- ''ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्'' इत्यादि । इस ऊँ की व्याहृति प्राणायाम के समय श्वासों के बहिःसरण और अन्तःसरण के समय आसानी से किया जा सकता है । त्र्यक्षरी ओ३म् और तीन व्याहृतियों के जाप से नाभि से लेकर मस्तिष्क की धमनियाँ जहाँ सामान्य होने लगती हैं-रक्त प्रवाह सामान्य होने लगता है, वहीं हृदयस्थ धमनियों की रुकावट भी धीरे-धीरे ठीक होने लगती है । इंटरनल ऑटोनोमिक नर्व्स पर असर पड़ने लगता है और दोनों की गतिविधियाँ कम हो जाती हैं । एंग्जाइटी, डिप्रेशन और रक्तचाप कम हो जाता है, व्यक्ति शान्ति महसूस करने लगता है । बीमारियों का निवारण आसान हो जाता है । हाँ, ओ३म् जाप और प्राणायाम क्रिया के साथ ही साथ युक्ताहार विहार का होना आवश्यक है और इस प्रकार का योग (ओ३म् का जप प्राणायाम तथा युक्ताहार विहार का संयोग) जीवन में शारीरिक दुःखों का निवारक हो जाता है-

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्ठस्य कर्मसु ।
युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःख हा ।।

खराब हो गया है । इसलिए तुम ऐसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो ।'

वकील महोदय बोले, स्वामीजी ! मेरा दिमाग खराब नहीं है । मैं तो आपको केवल यह बताना चाहता था कि जब उपर्युक्त तीनों बातें अच्छी हैं । तब यदि हम कचहरी में झूठ को सत्य सिद्ध कर दें तो वह बुरा क्यों है ? यह है कुटिलतायुक्त पाप ।

मन में कुछ, वचन में कुछ और कर्म में कुछ, यही कुटिलता है, टेढ़ापन है और पाप हैं । जो मन में ही, वही वाणी में और वही कर्म में, यदी सत्य है, धर्म है, सरलता है । इस मन्त्रखंड में प्रभु से प्रार्थना की गई है कि हमें ऐसी शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करो कि पाप की प्रवृत्ति भस्म हो जाए ।

इस मन्त्रखंड का अर्थ यूं हो सकता है- हे आत्माग्ने ! तू कुटिलतायुक्त को पृथक कर दे।

अग्नि पावक है, शोधक है । जैसे सुवर्ण को अग्नि में तपाकर उसके मलो को शुद्ध कर उसे दिव्य कुन्दन बनाया जाता है, उसी प्रकार हृदय के सच्चे पश्चाताप से, अन्तर्दाह से पापरूपी मल धुलकर हृदय शुद्ध, पवित्र और निर्मल हो जाता है । मल, विक्षेप और निर्मल हो जाता है । मल, विक्षेप और आवरण हट जाता है, चित्त शुद्ध हो जाता है । वासना मैल हटकर आत्मा दिव्य कुन्दन की भांति चमकने लगता है ।

भूयिष्ठां ते नमः उक्ति विधेम-अन्त में साधक भक्ति भाव से अनुप्राणित होकर परमात्मदेव को बारम्बार नमस्कार करता है । विनय, भक्ति और श्रद्धा साधक की साधना के प्रमुख अंग हैं । भक्ति और श्रद्धा से विलग होकर हृदय सूख जाता है । विनम्रता के बिना ज्ञान की प्राप्ति भी नहीं होती ।

साधक की विनम्रता, परिश्रम और सेवा से परितुष्ट होकर ही तत्वदर्शी गुरु ज्ञान का उपदेश करते हैं । प्रभु को बारम्बार नमन करने से भक्त में अभिमान नहीं आता । अहंकार शून्य होकर मनुष्य मुक्ति तक पहुंच जाता है ।

यह दुर्लभ मानव-जीवन हमें स्वराज्य आत्मराज्य-मुक्ति प्राप्ति के लिए मिला है । अपनी आत्मा को जानकर मनुष्य शोक और मोह से मुक्त हो जाता है । इसी स्थिति को परमपुरुषार्थ कहा गया है ।

गांव में आज भी यही परम्परा है कि गोत्र या गांव की लड़की पूरे गांव की बेटी मानी जाती है । इस तथ्य को शहर या दफ्तर में बैठने वाले अधिकतर लोग नहीं समझ सकते, न पचा सकते हैं । इनकी दृष्टि में बालिग लड़का या लड़की किसी भी जाति, धर्म से सम्बन्धित हो कानून के अनुसार एक दूसरे के साथ विवाह कर सकते हैं । माता-पिता की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है । वे पूरी तरह स्वतन्त्र है, दूसरे पक्ष का कहना है कि यह कानून न तो हमारी सलाह से बनाया गया और ना ही हमारी परम्पराओं व परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाया गया था । इसलिए हम मानने को बाध्य नहीं हैं । ऐसे मामलों में युगलको आजीवन अपने गांव, माता-पिता से अलग रहना पड़ता है ।

आर्य समाज अन्तर-जातीय विवाह का समर्थन करता है मगर आर्य समाज भी पूर्ण रूप से इसे नहीं अपना पाया । भारतीय समाज विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों, संस्कृतियों का देश है लेकिन साझे प्रयासों और साझी सोच से जब समग्र समाज की कल्याण की बात चलेगी तो देर-सवेर ऐसा समाधान अवश्य निकल आएगा जो अधिकांश को मान्य होगा । यदि नई सम्भावनाओं और नई परिस्थितियाँ पैदा की जाए तो ऐसे समाधानों का क्रियान्वयन सहज एवं सरल होगा ।

आर्य समाज उस समृद्ध संस्कृति का समर्थक है जिसमें भारतीय नारी की समानता, न्याय, स्वतंत्रता के अधिकार प्राप्त थे । जिसे आधुनिक नारी प्राप्त करना चाहती है । यह तभी सम्भव है जब समाज में वेदों की आचार संहिता का भी पालन होगा । जिस वातावरण में ये अधिकार उपयोगी होंगे, वह वातावरण तैयार नहीं हो रहा । नारी की शिक्षा, संस्कार, चरित्र और रोजगार की जब तक समुचित गॅरण्टी नहीं मिलती तब तक इन अधिकारों की संदिग्धता और दुरुपयोग की सम्भावना बनी रहेगी ।

Arya Samaj and its role in Freedom Struggle of Hyderabad

(Published on the Occasion of Hyderabad Liberation Day on 17th September)

Arya Samaj, founded in 1875 at Bombay by Maharishi Dayanand Saraswathi, has been hailed as one of the most potential and dynamic socio-religious movements of the day. It had a great impact on the life and thinking of the people particularly of the Hindus in the 19th and 20th centuries. *According to Dr.K.P.Jaiswal, "The foundation of the Arya Samaj marked the beginning of vital changes in the social, religious,educational and national life of the vast majority of the people of India, as well as among the followers of the various faiths of the world."*

Speaking on the role of Arya Samaj, Yogi Arvind Ghosh of Pondichery said,

"Dayanand was the real harbinger of the Indian Renaissance which opened up new directions and fresh hopes for millions of people who were groaning under the worst kind of slavery resulting from social, religious, cultural and political decadence."

In the light of the above statements the role of the Arya Samaj during the latter part of the reign of the last Nizam, Osman Ali Khan becomes very clear. The Arya Samaj in Hyderabad gave an impetus to the political awakening and paved the way for political emancipation at Hyderabad.

The political problems in Hyderabad related mainly to injustice of the minority rule over the majority. The minority of the ruler's community aspired to grow in strength through religious planks. Proselytizing the members of the majority community was one of the easy means to add to their own numbers. This was quite justified as long as the means are fair and merely persuasive. But when unfair means were employed the situation became quite explosive. The Arya Samaj in Hyderanbad state was founded in 1880 in Dharur Taluk of Beed district which acted as head office to guide its activities. In 1892, the Arya Samaj of Hyderabad was started in Residency area, later renamed as Sultan Bazar. The first President here was Pandit Kamata Prasadji Misra.

The teachings of the Arya Samaj had penetrated long ago into Hyderabad even before the dawn of the 20th century. But its impact was felt from the time Pandit Keshava Rao Koratkar, a great patriot and lawyer was elected the President of Arya Samaj in Hyderabad and he continued to remain at its helm 1932. He infused great vigour into the activities of Arya Samaj. He established many branches of Arya Samaj throughout the state and helped the spread of education through libraries and schools.

The satyarth Prakash of Arya Samaj was rendered into Telugu in 1921. They even rendered financial help to movements outside Hyderabad like the Moplah rebellion in Malabar. Their activities attracted an enthusiastic band of workers who vowed to protect the interests of the majority.

The Ganesh Utsav, to celebrate the birthday of the popular Hindu God, Ganesh was started in Maharastra by the great Revolutionary leader, Bai Gangadhar Tilak. It served as an effective means of public awakening through the media of songs, lectures and melas. In 1895, for the first time in Hyderabad, Ganesh festival was held at Shah Ali Banda and Chaderghat and it evoked a good response. The festival at Chadharghat was organized entirely by students. This greatly helped in rousing public opinion. They also provided a training ground for workers in constructive social action.Due to the influence of the Razakkars on the Nizam, a number of restrictions were brought on the Hindus by the government. L.B.Phatak the editor of Maratha weekly,

Nizam Vijay, had brought out a brochure in 1931 in English under the title "Religious Disabilities of Hindus in the Hyderabad State". The facts below are from that brochure. A circular was issued by the government regarding religious celebrations, "...The Dasara is a great festival for the Hindus in which music processions form a leading part. Its character is jubilant, but it may synchronies with Moharrum which has a melancholy character.

Therefore the government issues the following circular dated 13th Aban, 1326F, 1916 By Order of HEH the Nizam's government according to which All Hindus of Hyderabad city and of the districts should perform their worship without any sort of music. Batkamma (goddess) should not be brought out and Hindus should not play music even in their household temples".

As a result of such restrictions, tempers rose on the side of the majority community. Often it led to riots between the two communities. One of the earliest riots during Osman Ali Khan's reign was the riots at Gulbarga, and this incident was conveyed to the Secretary of State in London by the Vice roy (Foreign and Political department) in Simla through a Telegram. The subject of the Telegram read 'Hindu Mohamadan Riots at Gulbarga in the Nizam's dominions'.

"On11th August, a Hindu procession passed a mosque during prayers. The Mohammedans objected and the Procession was turned back by magistrates' orders.The mob was dispersed by Police after some stone throwing. The next day the Mohammedan religious is said to have been insulted while a Mohamedan procession was passing a Hindu temple............ Riots got out of hand. Police Superintendent was shot and in the end police dispersed the mob by fire, killing one and wounding seven. Nizam on 19th issued a Firmanappointing a commission of enquiry. It is alleged that tense atmosphere had been created by Muslim proselytism.... Accounts in Times of India allege Mohameddans to have been aggressors and to have deliberately damaged their mosques with a view of exciting Mohammedan feeling against Hindus. Apparently practically all the temples in the town were raided and damaged and idols destroyed... The government is undertaking repairs to temples and mosques."

There was strange religious activity started by a Muslim by name Siddiq Dindarin 1929. He declared himself to be as the Avtar of Chenna Basweshwar held in high regard by Lingayats. Siddiq Dindar said that Islam was the modern form of the preachings of Chenna Basweshwar. He delivered speeches belittling the Avtars of Rama and Krishna and irritated the feelings of the Hindus. Sri Mangala Dev, a preacher of the Arya Samaj was invited to counteract the harangues of Siddiq Dindar.

Another learned scholar, Pandit Ramachandra Dehlavi who had read the orignal Quran and its commentaries also came to Hyderabad.' This propaganda on both the sides Telegram Rno, 1350-8 dated 28* August 1924, dispatched at 3-30 p.m. in F.No. 84(2) poll. 1924 (Foreign Political)

Pandit Ramachandra Dehlavi was considered the Prince among Preachers. Since his speeches made a great impact there was great pressure on the State authorities to somehow implicate the Pundit and curtail his influence on the Hindu and Muslim population of the State. On the third day of his meeting, he was served summons at 9.30 p.m. signed by the Subjudge at Bidar requiring him to answer a charge of insult to Islam on the basis of a lecture delivered at Halikhed in September 1933. The news of his prosecution created a great sensation all over India. A telegram was sent by Sri Narayan Swamiji, President of the league to HEH the Nizam of Hyderabad and another letter on the same subject was addressed to Professor. M.Sudhakar, Secretary of the League. Because of began to embitter mutual relations. The followers of Siddiq believed to be five hundred strong wore the green turban of Muslim divines, the saffron robe of Hindu Sadhus and beard in the style of the Sikhs. When the situation in a village grew tense, they led the Muslims against the Hindus. Siddiq increased his proselytizing activities unchecked

The Hindus on January 10th 1932, submitted a petition to the Nizam tocheck his activities. When the opposition became too strong, the Nizam's government imposed some kind of restriction on Sidiq's activities but he continued to function till 1948. Though the Razakkars looked upon the Deendars with contempt, they tolerated them as convenient allies for the terrorization of the Hindus . Another circular issued requires that no processions even those organized in connection with religious ceremonies; could be conducted without the previous sanction of the Ecclesiastical Department. Circulars were issued to ban music to be played in front of a mosque. Another circular denies Hindus the right of constructing new temples and of repairing the old ones, whereas the states funds principally drawn from the Hindu population are made available for the erection, maintenance and upkeep of mosques, both in Hyderabad and outside. The Hindus were also not allowed to look after their educational and cultural interests.

"The state controls the entire education of its people and neglects the cultural interest of the Hindus as against those of the Muslims which it fostered with special care and religious zeal." the agitation launched against the prosecution, the Nizam's government dropped the case proposed to be filed against him. But the Pandit was deported.

Accoring to Pandit Narendraji in his book, Jeevan Ki Doop Chai\ Hyderabad 1998, "Deendar wrote a book, "Sarvaare Aallaam' in which he ridiculed Yogeshwar Krishna and the goddesses. All the rules regarding private schools, public meetings were published by the Standing Committee in the Hyderabad Peoples Educational Conference. There was glaring injustice in representation of different communities in legislatures and civil services. They were not based on size of the population. In the Indian States Journal of 6 th May 1931, there appeared a note on recruitment to civil services. The note gave a picture of the pattern of application, nomination and selection of candidates. 441 Muslims had applied as against 91 Hindus. From among them,275 muslims and 54 Hindus were nominated. Ultimately 34 Muslims and four Hindus were selected. The lopsided policy of the Nizam's government and their efforts to increase the number of minority at the expense of majority was questioned and checked by the AryaSamaj. Thus, the Nizam's government changed their attitude towards Arya Samaj and began to place a number of impediments before it. It grew so much that even the normal functioning of Arya Samaj had become impossible. They failed to secure the legitimate rights of religious worship and practice."

The Nizam's government began to impose restriction on the Arya Samaj preachers.

One of the first victims was Pandit Chandra Bhanu. He was served a deportation order by the State on 17th September 1932. Due to such injustice they began the constitutional fight with the Nizam's government. It was a fight between patience on one side and persecution on the other. They lodged their protests initially through Extract from the minutes of Hyderabad Civil Service Committee meeting held on 17th Khurdad, 134 If in A.P.State Archives. " According to V.Yashoda Devi in her article, "Social and Religious reform Movements in A.P. in the 19th and 20" "Unlike the Brahma Samaj, the Arya Samaj was revivalist in nature. They also undertook earnestly the work of social reform. The missionaries of Arya Samaj like Adipudi Somanatha Rao were engaged in receiving converted Christians and Muslims into the fold of Hinduism through a purification ceremony. p365 This probably irked the Nizam's government.

The resolutions, memorials and representations. They were finally driven to utter helplessness and desperation. The Nizam's government would often bring a last minute ban on the anniversary celebration planned by the Arya Samaj much in advance. They were not allowed on most occasions to go on a procession. When the grievances of the Aryas increased, the President Mahatma Narayan Swami submitted a memorial dated 9th August 1934, to his Exalted Highness seeking his personal and gracious intervention for the redressing of Arya Samaj grievances. He explained in detail

the role of the Arya Samaj as a universal organization and the decades of its service in the Nizam's government. He cited the services of some of them who worked as loyal and distinguished subjects of the Nizam. He lamented that a highly respected and renowned person like Pandit Ramachandra Dehlavi was treated so badly. He also pointed out that on the death of Pandit Keshava Rao, a judge of Hyderabad High Court of Judicature and pioneer of Arya Samaj, the Kotwal had served a notice that only a resolution on the occasion could be passed but no speeches were to be delivered. Therefore it was quite natural that such an order should provoke resentment, foster discontent and produce needless heart burning. He urged the government not to make any restriction on entry of Arya Samaj preachers in the state. No discrimination be made, their religion and their logical literature may not be forfeited without proper enquiry

After a long wait, a reply from the Political Member of HEH Nizam's government was sent. He wrote The case of Arya Samaj in Hyderabad from the Collections of Harishchandra Heda Gyanakumari Heda Samvai Seva Trust.

Pandit Narendraji along with other distinguished addressed a gathering in Halikhed.

He said "paap se daro paapi se nahi"(fear sin, not the sinner) This had a great impact on the youth who were determined to fight the atrocities of the Nizam's .from , Narendraji,opcit.p.p.32,33.

An intimation regarding this memorial along with the copy of the same was also sent to the Political Secretary, Foreign and Political Department, Government of India. The memorial submitted by the president was not even acknowledged by the Nizam in The Case Of Arya Samay opcit,p.8.

"I am now desired to inform you that there is no question of putting any restrictions in the way of the followers of any religion or sect in Hyderabad state. HEH, the Nizam's government is and always has been impartial in the treatment it accords to its subjects, of whatever religion or sect or denomination they may be ... I am to add therefore that there has been no idea of putting the Arya Samajists in particular under any special disabilities."

But the debate between the Aryas and the Nizam's government continued as there were many misgivings on the part of the government. Shri Narayana Swami, Swami Swatantranand and Acharya Ramadev came in a deputation to see for themselves the conditions in the state. They were allowed to move freely and address meetings. But the moment they left the state all the restrictions were revived with greater vigour.

In 1935, the first Taluqdar of Bidar ruthlessly dealt with Arya Samaj at Nilanga. in Bidar district. Havan Kund and Samaj Mandir were desecrated and destroyed. The Samaj registered its protest against this sacrilegious action of the Taluqdar. Nawab Zuloader Jung, the Police Secretary of the State ordered the Taluqdar to reconstruct the Mandir and the Havan Kund, spending money from his own pocket.'

But the attitude of the government was very stiffened. The Samaj could not celebrate any functions, meetings relating to death anniversary and birth anniversaries dates of great personalities, religious ceremonies, fairs, Nagar kirtans, literary activities, conduct schools or have Havan Kund or unfurl 'OM' flags. After intensified endeavors, the Samaj was permitted to start an under weekly, Vaidic Adarsh in 1934.

But the fearless and frank tone of Pandit Narendraji in it displeased the government and its publication was stopped by a government order in 1935. In 1936, at Humnabad - Manik Nagar, the Arya Samaj workers had commenced their preaching work. A few mussalmans picked up a quarrel with a 'Nagar Kirtan' party and there was a scuffle and a clash. The police appeared on the scene encouraging the musalamans to chastise the Aryans. The two famous brothers Bansilal and Shamlal and Pandit Narendra were arrested. At Umerga, a worker by name Ramachandra was found to have a copy of Satyartha

Prakash. It was seized by the police as a seditious book. A Great agitation had to be made after which the Satyartha Pakash was returned to Ramachandra.

When the circular No.53 which forbade all meetings of every character was issued in 1937, the Arya Samaj protested against it by holding celebration without any prior sanction. That year, an Arya Samjist, Veda Prakash, was persuaded to accept Islam but on his stubborn rejection to do so he was murdered at Gunjoti. An All India Aryan Conference was held from 25 th to 29th December 1938 in Sholapur now in Maharastra. The president of the session Sri Madhav Sri Hari Annay addressed the Nawabs and Rajahs saying that "in today's world they need the help of the people to govern and to hand over responsibility to them"

According to Rajandra in his book AsafJahis of Hyderabad, The Arya Samaj, which was basically a movement of religious reform, inevitably strayed into political territory'to take the cause of the majority community in Hyderabad which was living under unspeakable disabilities.

The Arya Samaj defied the order of the government in 1938 that their permission be sought before a Havan Kund was constructed anywhere. The resentment in the majority community and the high-handedness of the government led to a number of communal riots in the year 1938. • At Gulbarga, in 1938 riots burst out because a few drops of colored water soiled the dress of a Musalman during Holi celebration. Prominent Hindu local leaders were arrested and sentenced. • The notorious Dhulpet communal riot took place in Hyderabad in 1938 when 21 active workers of Arya Samaj were arrested.

• A serious riot took place at Vidigir during the Dasara celebration in 1938 in which Shiv Shyamlal was arrested along with 20 colleagues. He died in Bidar jail. It is reported that some foul play was the cause of his death. • To stop the activities of Pandit Narendra, the government arrested and sent him to Mannanoor.

During this period an open letter was written to Sir Akbar Hydari, the Premier of Hyderabad. Though initially he was very broad minded and benevolent he played into reactionary hands and thus had disappointed the people of Hyderabad. Excerpts from the letter which was published and printed are given below.

"Your Excellency, pardon me for the liberty but I believe even great men need sometime be told some plain home truths... you have an eye for merit and appreciate good work done by others, Although prejudiced against Arya Samajists, your sincere regard for the service rendered by them in plague and in influenza is well known ... You have never lost any opportunity to exercise your influence to utilize your position for the good of the Muslims... The yeomen contribution you have made to the perpetuation of Muslim stewardship of Hyderabad by the inauguration of the Osmania University cannot be equaled by any one before or after you...By the acquisition of the Railway you have opened fresh avenues of services for Muslims, who were in microscopic minority in the Railway services before acquisition by the Government ... The reasons for your change in attitude, Sir Akbar, can I think be traced to the last communal riots in Hyderabad. It is an open secret that you were surrounded by reactionaries during these riots. The whole blame for the riots was piled on the poor AryaSamajists and the Hindus by the Information Bureau.

యజ్ఞమయ జీవనము

(జీవనములో జీవించె కళ)

హిందీ మూలం ప్రణేతా : ఆచార్య ప్రేమ భిక్షు,
తెలుగు స్వేచ్ఛానువాదము : దేవరకొండ దత్తాత్రేయ

వేద మహిమ

ఓమ్ భూర్భువః స్వః తత్సవితుర్వరేణ్యం భర్గో దేవస్య ధీమహిః । ధియో యోనః ప్రచోదయాత్ ॥

-యజు 36-3

గాయత్రీ సంకీర్తనము

ప్రాణదాతా, సంకట త్రాతా, హే సుఖదాతా ।
ఓమ్, ఓమ్ ॥

సవితా మాతా, పితా, వరేణ్యం భగవన్ భ్రాతా । ఓమ్, ఓమ్ ॥

నీ శుద్ధ స్వరూపమును మేము ధారణ చేయుదుముదాతా ! ఓమ్, ఓమ్ ॥

మా సుకర్మలలో ప్రజ్ఞను ప్రేరేపింపుము. విశ్వదాతా ! ఓమ్, ఓమ్.

ఓమ్ స్తుతామయా వరదా వేదమాతా, ప్రచోదయంతాం, పావమాని ద్విజానాం । ఆయుః ప్రాణం ప్రజాం పశుం కీర్తి ద్రవిణం బ్రహ్మవర్చసమ్ । బ్రహ్మండత్వా వ్రజత బ్రహ్మ లోకం ॥

-అథర్వ (16-1-91)

మాన్య మాతలారా ! పుత్రీ, పుత్రులారా ! ఉపస్థిత సత్సంగ ప్రేమీ మిత్రులారా ! మనము సౌభాగ్యశీలురము. మనకు ఈ దివ్యమైన మానవ శరీరము లభించినది. మనము మరింత గొప్ప సౌభాగ్యవంతులము. ఎందుకనగా మనకు ఈ ధరిత్రి యొక్క సర్వోత్తమ భూ-భాగము లభించినది. ఇది గౌతమ, కపిల, కణాద, పతంజలి, వ్యాస, జైమిని మరియు పాణినీ వంటి ఋషి, మునుల యొక్క జన్మధాత్రీ, భగవాన్ మర్యాద పురుషోత్తముడు, యోగిరాజ్ శ్రీకృష్ణ భగవంతుని వంటి మహనీయ వ్యక్తుల మరియు సీతా, సావిత్రీ, గాయత్రీ, మైత్రేయీ వంటి విదుషీమణి దేవీ దేవతలకు జన్మనిచ్చిన గౌరవము ఈ పుణ్య భూమి భారతమాతకు లభించినది. ఈ పుణ్యమయీ మహిమాన్విత గౌరవము ఈ భారత భూమిలో జన్మించిన ధన్యజీవులము మనము.

మిత్రులారా ! మాతలారా ! భారతమాత వంటి మాతృభూమి ఒడిలో మనకు ఈ మానవ శరీరము లభించినది. అంతేకాదు, మనకు ఈ పవిత్ర వైదిక సత్సంగములో పాల్గొనె సుయోగము లభించినది. మనకు ఆచార్య రూప యుగపురుషుడు మహాన్ క్రాంతికారీ దయానందుని వంటి అపూర్వ ఆచార్యుడు లభించి యున్నాడు. అతడు స్వయముగా విషపానము చేసి మనకు వేదామృత కలశాన్ని ప్రసాదించినాడు. యుగ యుగాంతముల తర్వాత మరల మనకు ఈ వ్యవస్థ లభించినది. "వేదములను చదువుట, చదివించుట మరియు వినిపించుట సమస్త ఆర్యుల పరమ ధర్మము".

మిత్రులారా ! రామాయణము చదువుట ధర్మము. మహాభారతము మరియు భగవద్గీత చదువుట ధర్మము. సత్యార్థ ప్రకాశము మరియు ఋగ్వేదాది భాష్యభూమిక చదువుట ధర్మము. కానీ, వేదములను చదువుట-చదివించుట-వినుట-వినిపించుట పరమ ధర్మమై యున్నది.

"స్తుతామయా వరదా వేదమాతా ప్రచోదయంతామ్...బ్రహ్మలోకం"

మిత్రులారా ! ఈ పవిత్ర మంత్ర చింతనము మనకు వేదము తల్లియని చెప్పుచున్నది. ఉత్తమమైన తల్లి తన సంతానమును తప్పు మార్గము నుండి తప్పించి సుపథ మార్గమున నడుచునట్లు ప్రేరేపించును. "త్వమేవ మాతాచపితా త్వమేవ" విశ్వధాత్రీ మాత తన అమృత పుత్రులను దురితముల నుండి త్యజింపజేసి భద్ర మార్గమున పయనించునట్లు ప్రేరేపించుచున్నది.

ఈశ్వరీయ జ్ఞానము యొక్క ఆవశ్యకత

ప్రపంచములో సాధారణముగా రెండు విధములైన జ్ఞానము ప్రకటిత మగుచున్నది. 1) సామాన్య జ్ఞానము, 2) విశేష జ్ఞానము. సామాన్య జ్ఞానము జీవులకు స్వాభావికముగనే లభించును. ఆవు, గేద, గుఱ్ఱము మొదలగు పసువులలో మరియు పక్షులలో మృగ జాతులలో కేవలము భోగశక్తిని చూడగలము. అవి అన్నాది పదార్థములను భుజించును. కాని వాటిని ఉత్పత్తి చేసిన వృద్ధి చేయు జ్ఞానము వాటికి లేదు. మనుష్యులలో భోగశక్తితో పాటు తమ కర్తవ్య శక్తితో అన్నాది పదార్థములను వృద్ధి చేయు విశేష జ్ఞానము కలదు. మనుష్యులకు ఈ విశేష జ్ఞానము మరొక విశేష నిమిత్త కర్త ద్వారా లభించినదని తెలియుచున్నది. మనకు ఈ నైమిత్తిక జ్ఞానము మన తల్లి, తండ్రి, గురువు మొదలగు వారి వలన లభించుచున్నది. వీరు లేకుండ మానవ జీవులకు విశేష జ్ఞానము లభించే అవకాశము ఎంత మాత్రము లేదు. మనము మన గురువులతో భాషాజ్ఞానమును, ప్రపంచ జ్ఞానమును నేర్చుకొందుము. ఈ గురు పరంపర జ్ఞానము అనాది మానవ నిర్మాణ కాలము నుండి పరంపరగా లభించుచున్నది. గురువులు నేర్పకుండ ఏ మనుష్యుడు భాషా మరియు లోకజ్ఞానమును నేర్చుకొన లేడు. అయితే అది సృష్టిలో మనగురువులకు గురువు ఎవరైయుందురు ? యోగ దర్శనా చార్యుడైన ఋషి మానవ మాత్రులందరికి ఆది గురువు పరమాత్ముడని చెప్పుచున్నాడు. "స పూర్వేషామపి గురుఃకాలెనా నవచ్ఛేదాత్" -యోగదర్శనము (1-26) పరమేశ్వరుడు మనందరికి ఆది గురువు. పరమేశ్వరుడు సృష్టి ఆరంభములో ఋషుల హృదయములో వేదములను ప్రకాశింపజేసి వారికి భాషా జ్ఞానము నేర్పెను. ఆ తర్వాత మరొకరు నేర్చుకొనుట, నేర్పించుట పరంపరగా కొనసాగుచున్నది. ఈ విధముగా జగత్తులో ఈ ఈశ్వరీయ జ్ఞాన ధారా, ఆ పరమ గురువు పరమేశ్వరునిదే యని ప్రకట మగుచున్నది.

ప్రియ బంధువులారా ! మాతలారా ! ఒకే తల్లి గర్భములో జన్మించిన ఒక బాలుడు ఆరోగ్యవంతుడుగానూ, రూపవంతుడుగానూ, మేధావిగానూ, లోకప్రియుడుగాను ఉండును. కానీ అదే తల్లి గర్భములో జన్మించిన మరొక బాలుడు వికలాంగుడుగానో, బుద్ధిహీనుడుగానో, అకీర్తివరుడుగానో ఉంటు ఉన్నాడు. ఒకే సాంచాలోని ఇటుకలన్ని ఒకే రూపములో ఉండును. కాని, ఒకే తల్లి గర్భమున జన్మించిన ఇద్దరు బాలురలో ఈ భేదమెందులకు ? దీనికి కారణము, ఆ బాలుర యొక్క పూర్వ జన్మ కర్మ ఫలము మరియు ఈశ్వరీయ న్యాయ వ్యవస్థ పరిణామము.

ప్రియ మిత్రులారా ! మన సంతానమునకు గానీ, లేక సేవకునకుగానీ కుకర్మలు చేయకూడదని తెలుపకుండ, వారుతెలియక చేసిన కు

కర్మలకు వారిని దండించుట న్యాయ సమ్మతము కాదు. నిషేధింపబడిన కార్యములను వారు తెలియక చేసిన, తెలిసి చేసిన దండనార్హులగుదురు. ఏ కార్యములు చేయనగునో, ఏ కార్యములు చేయగూడదో మొదట యజమాని తన భృత్యునకు గాని లేక తన సంతానమునకు గాని తెలుపవలెను. అట్లు తెలియజేయకున్న న్యాయ వ్యవస్థానుసారము దోషి యజమాని అగును. వివేకవంతుడైన యజమాని మొదలు తాను న్యాయము పాలించును. పరమేశ్వరుడు న్యాయకారి. కావున విధి నిషేధములను వేదము ద్వారా మానవ సమాజమునకు ముందే తెలియ చేసినాడు. అట్టి ఆజ్ఞలను ఉల్లంగించినవారు దండనార్హులగుచున్నారు. ప్రపంచములో వేల కొలది జీవులు నానా ప్రకారములైన దుఃఖములను పొందుచున్నారు. వారిని చూచిన మనుష్యుడు ఆ దుఃఖములను కారణము పూర్వ జన్మ ఫలమని అనుకొనునా ? లేక ఈశ్వరుడే అన్యాయకారి అనుకొనుకొనునా ? కాని ఈశ్వరుడు సర్వదా న్యాయకారి. అతనిని అన్యాయకారి అను కనుట మూర్ఖమగును.

ఔను ఈ దుఃఖములన్నియు మనుష్యుల పాపకర్మల ఫలములు. పాపము, ఈశ్వర ఆజ్ఞను ఉల్లంఘించుట వలన లభించుచున్నది. ఈ విధముగా తెలియ బడుచున్నదేమనగా, ఈశ్వరుడు తన సంతానమునకు పాప దోషములు అంటకుండా ఉండునట్లు ఆదేశించినాడు. ఈ విధముగా ఈశ్వరీయ ఆదేశములను పాలించిన వారికి సుఖము మరియు పాలించని వారికి దుఃఖము కలుగుచున్నది. ఒక చిన్న రాజ్య పరిపాలన కొరకు సంవిదానము లేక పరిపాలన చట్టము అవసరమగుచున్నది. అయితే ఈ అఖిల విశ్వబ్రహ్మాండమును పాలించుట కొరకు విశ్వవ్యాప్త సంవిదానము లేక శాంతి భద్రతల, చట్టము అవసరము. అట్టి సంవిదానము లేక శాంతి భద్రతల చట్టమునకు పేరే "వేదము" ఇందులో సమస్త బ్రహ్మాండములోని జ్ఞానము మరియు విధి నిషేదములు ఉల్లేఖింపబడియున్నవి. జీవుల కళ్యాణార్థము పరమేశ్వరుడు సృష్టి ఆదిలోనే ఈ వేదజ్ఞానమును ప్రకాశింప జేసెను.

రండి ! ఈ విషయములో మరికొంత తెలుసు కొనుటకు ప్రయత్నించుకుందాము. చూడండి ! ప్రపంచమంతటికి ఒకే సూర్యుడు వెలుగు నిచ్చుచున్నాడు. ఇది ఈశ్వరీయ ప్రకాశము. మిగతా వెలుగునిచ్చె దీపాలు, దివిటీలు, కరంటు బల్బులు అన్నియు మనుష్యులు చేసినవి. అవి వారి వారి పరిమిత పరిధిలోనే వెలుగు నిచ్చును. ఆదే విధముగా ప్రపంచమంతటికి ఈశ్వరీయ వేదజ్ఞానము ఒకటిగానే ఉన్నది. మిగతా జ్ఞాన పుస్తకములన్నియు మనుష్యులు చేసినవి. ఈశ్వరీయ వేదజ్ఞానము సృష్టి ఆదిలోనే, ప్రకాశింపబడినది. ఇది మధ్యలో రచింపబడలేదు. సూర్యునిలో ఏ భాగము కూడా అంధకారములో లేదు. అది సంపూర్ణముగా, ప్రకాశించుచున్నది. అదే విధముగా ఈశ్వరీయ వేద గ్రంథము సమస్త సత్‌విద్యలు సంపూర్ణముగా విద్యమానమై యున్నవి. ఏ విధముగానైతె ఈశ్వరుడు నిర్మాణము చేసిన సూర్యుడు మరియు వాయువు అందరి కొరకు ఉన్నదో, అదే విధముగా ఈశ్వరీయ వేదజ్ఞానము కూడ అందరి కొరకు ఉన్నది. "శృణ్వంతు విశ్వే అమృతస్య పుత్రాః" మరియు "యథేమాం వాచం కళ్యాణీ మావదాని జనేభ్యః" ఈ పావనీయ వేదమంత్రము ఆధారముగా భగవంతుడు వేదజ్ఞానమును సమస్త మానవుల కొరకు అనగా సమస్త వర్ణముల వారి కొరకు ఇచ్చి యున్నాడు. అది అన్ని కాలములలో అన్ని దేశములలోని సమస్త స్త్రీ పురుషుల కొరకు సమాన రూపమున ఇవ్వబడినది. సర్వకాలిక, సార్వభౌమిక, శాశ్వత సత్య జ్ఞానమును పొంది జీవనమును ధన్యము చేసికొనవలెను. ఏ విధమైన భేద భావము లేకుండ ప్రపంచములోని సమస్త జనులు వేదజ్ఞానమును పొందుటకు అర్హులై యున్నారు.

ప్రియ బంధువులారా ! మాతలారా ! ఒకప్పుడు ప్రపంచ మంతటిలో ఒకే-ఒక ధర్మ గ్రంథము వేదము ఉండెడిది. ఒకే-ఒక ధర్మము వేదధర్మము ఉండెను. అదే సనాతన ధర్మము. మానవ ధర్మము. ఒకే ఒక ఉపాస్య దేవుడు "ఓమ్" ఉండెను. ఒకే గురుమంత్రము "గాయత్రీ మంత్రము". ఒకే ఒక అభివాదము "నమస్తె". ప్రపంచమందలి శ్రేష్ఠ మానవులందరు "ఆర్యు" లని పిలువబడుచుండిరి. అప్పుడు ఒకే విశ్వభాషా "సంస్కృతము" ఉండెను. ఈ ఏదు సూత్రములతో బంధింపబడిన మానవ ప్రజా సుఖశాంతుల ధారలతో స్నానమాడుచు "వైదిక ధర్మాశ్రమ" ధర్మములను పాలించుచు తమ జీవనములను ధన్యము చేసి కొనుచుండిరి.

నాటి వైదిక యుగము అంతటి ఔన్నత్యముగా ఉండెడిది. మహాభారత యుద్ధములో ప్రపంచమందలి రాజాధిరాజులందరు పాల్గొని భీకర యుద్ధములో, మహామణులందరు మరణించిరి. రాజ్య వ్యవస్థ చిన్నాభిన్నమై వేదజ్ఞులు-విద్వాంసులు, నశించిరి. భారతీయ సభ్యత, సంస్కృతికి వక్ర భాష్యములు వ్రాసుకొని, పరస్పరము తగవులాడు కొనుచు దేశమును క్రమముగా పరాధీనము చేసిరి. "త్రయోవేదస్య కర్తారో భాణ్డ ధూర్త నిశాచరా" అని చెప్పుకోవటం జరిగినది. ధర్మము స్థానమును అధర్మము ఆక్రమించినది. పవిత్ర యజ్ఞములో, పశుబలి ఆరంభమైనది. మద్య-మీన-మాంస-మైథునములు మోక్షదాయకమని క్రూరముగా తాండవించినది ! ఉవ్వట-మహీధర సాయణ వంటి మూర్ఖుల ద్వారా వేదములు ఎంతటి క్రూరముగా నిందింపబడినవి !

ఇలా సహస్రాబ్దముల తర్వాత మరల ఆ పరమ కరుణామయి, మంగళమయి మాతకు ఈ దేశముపై కృప కలిగినది. వేదోద్ధారకుడు సత్య సనాతన ధర్మోద్ధారక ఆచార్య దయానందుని వంటి సుపుత్రుని పొంది భారతమాత మరొక మారు ధన్యమైనది. దయానంద మహర్షి ప్రబల ప్రభంజనుడై వేద సూర్యుని కప్పబడిన మత మతాంతరములకు, సంస్కారములను ఛిన్నాభిన్నము చేసి మానవ ప్రజలను వేదమార్గమునకు ప్రేరేపించెను.

మహర్షి పునః ఆర్య సమాజమును స్థాపించి, మన ఉపాస్య దేవత "ఓమ్" అనే ప్రియమైన నామమును మరియు ఆర్య అభివాద "నమస్తె" ను మరియు గురుమంత్రము "గాయత్రీ"ని ఇచ్చెను. మనము మరిచిపోయిన యజ్ఞయాగములను పునరుద్ధరించెను. సత్యార్థ ప్రకాశము-సంస్కారవిధి-ఋగ్వేదాది భాష్య భూమిక వంటి మహోన్నత గ్రంథ రాజములను మనకిచ్చి, మనలను వేదనుయాయులను చేసెను. నేడు మనము వేదముల శ్రవణ-శ్రావన పావన పర్వములను, సప్తాహములను ఎంతో భక్తి శ్రద్ధలతో ఉత్సాహముగా నిర్వహించు కొనుచున్నాము. రండి ! మనమందరము వేదోద్ధారక మహర్షి దయానంద సరస్వతీకి హార్దిక కృతజ్ఞతలు తెలుపు కొందాము.

"వేదోద్ధారక జగద్గురు మహర్షి దయానంద సరస్వతికీ" "జై" "వేదధర్మ ప్రతిపాలకుడు భగవాన్ మర్యాదా పురుషోత్తమ శ్రీరామచంద్రుడు" "వేద మర్యాదా సంరక్షక మహాయోగీశ్వర శ్రీకృష్ణునకు" "జై"

జీవన కళ

త్రివేణి సంగమము-ఆస్తికత యొక్క ప్రవాహము

తెలుగు స్వేచ్ఛానువాదము : దేవరకొండ దత్తాత్రేయ

ఓమ్, ఈశావాస్యమిదం సర్వం యత్కించ జగత్యాంజగత్ । తెన త్యక్తేన భుంజీథా మాగృధ కస్య సిద్ధనమ్ ॥

మాన్య మాతృశక్తి ఉపస్థిత సత్సంగ ప్రేమి బంధువులారా ! మనమందరము అత్యంత సౌభా గ్యశాలురము. మనము మన జన్మ-జన్మాంతర సాధన మరియు పరమపిత పరమాత్ముని అసీమ కృపవలన మనకు ఈ దివ్యమాన శరీరము లభించినది. మన ఈ అమూల్య మానవ జీవ నము ఎట్లు సఫలమగును ? అందు కొరకు ప్ర ప్రథముగా మన జీవన ఉద్దేశ యాత్రను తెలును కొనవలెను.

భగవంతుడు ఈ మన మోహన సుందర సృష్టి నిర్మాణము చేసి అందులో అన్ని విధము లను వనస్పతులను, ఔషధ మొక్కలను, అన్నాది ధాన్య ఫల పుష్పములను, ఔషధ మొక్కలను, అన్నాది ధాన్య ఫల పుష్పములను మరియు పశు పక్షులను, కృమికీటకాదులను రచించెను. అంతిమ రచనగా సృష్టికి ముకుటాయ మానమైన అత్యంత అద్భుత సుందర శృంగార మనుష్య శరీరములను నిర్మించెను. మానవ నిర్మాణముతో పాటు వారి జీవనోద్దేశముల పరిచయము కొరకు ఈ సృష్టిలోని సమస్త పదార్థములను ఎట్లు ఉప యోగించు కొనవలెనో తెలుపుచు, వారి జీవన లక్ష్య సిద్ధి కొరకు జ్ఞాన-విజ్ఞాన వేద జ్ఞానమును ఉ పదేశించెను. అయితె, వేదము ఏదేని పూజా పఠన కొరకు గాని, ఫల పుష్పాదులతో అలంక రించి, అన్నాది పదార్థములు సమర్పించి భక్తి శ్రద్ధలతో పూజించుటకు ఉద్దేశించిన గ్రంథము కాదు. వేదము చదువుకొనుట వలన బ్రహ్మ జ్ఞానము కలుగును. వేదము మనకు జీవన కళను నేర్పును. జీవన విధానమును నేర్పును. లోక కళ్యాణ మార్గమును ఉపదేశించును. చివరగా మోక్ష సాధనకు మార్గమును దర్శింప జేయును.

"మనము జగత్తులో జన్మించినపుడు, జగత్తు నవ్వినది. మనము ఏడ్చితిమి. మనము మన జీవిత కాలములో, జగత్‌లో ఏదైన పుణ్యకార్య ములు చేసి నవ్వుచు వెళ్ళవలెను. అప్పుడు జగత్ ఏడ్చును. ఇది జీవనములో జీవించె విశేష కళ యగును.

తీవ్ర విష ప్రభావములో శరీర మంతయు దుర్భర యాతన కలిగించుచుండెను. అంగాగ ములన్నియు పీడాగ్రస్తమై బాదించు చుండెను. కాని జీవన కళాచార్యుడు మహాయోగి దయానం దుని ముఖవర్చస్సులో ఒక అలౌకిక మందహా సము తాండవించుచుండెను.

"హా ! నా ఈశ్వరా ! ఎంత గొప్ప లీల చేసితివి ! నీ కోరిక ఇదే కాబోలు ! నీ కోరిక పూర్ణమగు గాక ! అని చెప్పుచు దీర్ఘ నిశ్వాసతో పరమ పవిత్ర "ఓమ్" యొక్క ధ్వనిచేయుచు జీవన లీలకు విరామ మిచ్చెను.

ఇచ్చట ప్రభో ! నీ ఇచ్ఛా పూర్ణమగు గాక ! అనగా నీ వేదజ్ఞాన పాలన నా ధర్మము. వేదముల శిక్షణానుసారము నా సమస్త కర్తవ్య కర్మలను పూర్ణ సఫలతో నీ ఇచ్ఛానుసారము చేసితినని దీని భావము. సమర్పిత జీవనము యొక్క ఆ ధర్మమే జీవన కళ యగును.

ఈశావాస్య మిదం సర్వం యత్కించ జగత్యాం జగత్ । తెన త్యక్తేన భుంజీథాః మాగృధః కస్య సిద్ధనమ్ ॥

పవిత్ర యజుర్వేదములోని (40)దవ అధ్యా యములోని మొదటి మంత్రము. ఇది జీవన కళ యొక్క తాళపు చెవి. ఇది జీవన కళ యొక్క తాళపు చెవి. ఇది విశ్వశాంతికి ఆధారమైనది. మంత్రము యొక్క మొదటి సూత్రము వైదిక త్రైత వాదము. మంత్రము చెప్పుచున్నది, (యత్కించ) ఏ దైతె (జగత్యాంజగత్) ప్రపంచములో స్థిరమై యున్నదో (ఇదం సర్వం) అది యంతయు (ఈశావాస్యము) ఈశ్వరునితో నిండి యున్నది. అనగా, ఈశ్వరుడు ఈ జగత్ నందలి సమస్త అను, అణువులో వ్యాప్తమై యున్నాడు. ఈశ్వరుడు సర్వ వ్యాపకుడు. ఒకటి వ్యాప్య జగత్, రెండవది దానిలో వ్యాపక పరమాత్మ. ఈ విధముగా రెండు సత్తాత్మక పదార్థముల అస్తిత్వము మంత్రాంశముతో తెలియుచున్నది. ఇప్పుడు మంత్రములోని ఉ త్తరార్థములో (త్యక్తైన భుంజీథా) త్యాగపూర్వకముగా భోగానుభవము మరియు (మాగృధః కస్య సిద్ధనం) ఎవరి ధనము ఆశించకుండ మరియు ఈ సమస్త ధనము పరమాత్మునిదని తెలుసుకొని, దానిని ఉపయో గించు కొనుమని ఆదేశించనైనది. ఈ ధనము ఎవరి కొరకు ? ఇది ప్రకృతి కొరకైతె అవసరము లేదు. ఇది నిశ్చయముగా మూడవ అనాది చేతన సత్తా జీవాత్మ కొరకై యున్నది. ఈ విధముగా మంత్రము మనకు, ఈశ్వర-జీవ-ప్రకృతి యొక్క "త్రికీ" పరిచయము.

ఈ ప్రపంచమును శ్రద్ధగా పరిశీలించి నపుడు మనకు ఇందులో మూడు తత్వముల బోధ కలుగు చున్నది. 1) నేను, 2) నీవు, 3) అతడు (అనగా పరమాత్మ). ఈ మూడు శాశ్వత సత్తా కలిగిన తత్వములు. ఈ విశ్వములోని మూలతత్వ ములని గోచర మగుచున్నది. ఈ మూడింటి అస్తిత్వములో మనకు దృఢమైన విశ్వాసము ఉండవలెనని మంత్రము వలన తెలియుచున్నది. అంతే కాదు, ఈ మూడింటి పరస్పర సంబంధ ముల జ్ఞానము కూడ మనకు తెలియవలె. అప్పుడే జీవనములో జీవించె కళ రాగలదు.

మిత్రులారా ! మాతలారా ! ఒకానొక రున్నారు వారి విచారము ఈ విధముగా నున్నది. ఏది కనబడుచున్నదో, అదే సత్యము. ఏది కనబడకు న్నదో, అది అసత్యము. కల్పితము. అనగా ఈ సంసారములోని భోగ పదార్థములు, ఈ శరీ రము, ఇంద్రియములు మరియు భవనములు, ఏవి కనబడుచున్నవో అవి అన్ని సత్యము. ఇది వారి యొక్క నినాదము. భావన. అను-త్రాగు- వినోదించు (Eat, Drink and be Merry). రావ ణుడు సీతతో ఈ విధముగనే చెప్పెను. "భుంక్ష్వ భోగాన్ పిబ రమస్వచ" ప్రపంచ పదార్థములను బాగా, బాగా అనుభవించు. చచ్చిన తర్వాత ఏమగునో ఎవరు చూచెను ? పరలోకము, పునర్జన్మము లన్నియు మిథ్య. ఈశ్వరుడు కన బడదు. ఆత్మ అనేది ఏది లేదు. అది కనబడదు. కావున ఇవన్నియు మిథ్య కల్పనలు.

రెండవ వారు కొందరున్నారు, వారు అంటారూ, ఈ ప్రపంచములో ఏది కనబడుచు న్నదో, అది యంతము మిథ్య-స్వప్నము వంటిది. ఏది కనబడుట లేదో, అదే సత్యము. ప్రపంచము కనబడుచున్నది మాతా-పితా-భాయీ, బంధువులు, ఇరుగుపొరుగు వారు. సమాజము రాష్ట్రము ఇవన్ని కనబడుచున్నవి, కాని ఇవన్ని మిథ్యమని చెప్పుచున్నారు.

పరమాత్ముడు కనబడుట లేదు. కావున అది సత్యము.

"బ్రహ్మ సత్యం- జగన్మిథ్యా-సర్వం ఖల్విదం బ్రహ్మనెహనా నాస్తి కించన" ఇవి వారి ప్రభోద వాక్యములు.

ఆశ్చర్యము కలిగించె ఈ అతి భౌతిక వాదము ఆశ్చర్యము కలిగించె అతి ఆత్మవాదము వలన లోకములో నిష్క్రియత నిరంతరాయముగా పోషింపబడి, వ్యాపించి, దేశము-రాష్ట్రము పరాధీనమై, వేల సంవత్సరము ఈ దేశవాసులు బానిసలుగా, దరిద్రము అనుభవించిరి.

విద్యాంచఽ విద్యాంచ స్త ద్వేదో భయం సహ !
అవిద్యాయామృత్యుం తీర్త్వ విద్యాయాఽ మృత మశ్నుతె ॥

భౌతికతా (అవిద్యా) మరియు ఆధ్యాత్మికతా (విద్యా) ఈ రెండింటి సమన్వయ (సహచర)యే జీవనము. జీవించె నిజమైన కళ. భౌతిక ఉన్న తితో భౌతిక దుఃఖములు దూరమై ఆవశ్యక సుఖ-సువిధములు లభించుసు మరియు అధ్యాత్మిక ఉన్నతితో, అమృతత్వము, మోక్షము యొక్క శాంతి లభించును. లోక, పరలోక ఈ సంబంధమే జీవన కళ. వైశేషిక దర్శన ఆచార్య మహర్షి కణాద శబ్దములో "యతోఽభ్యుదయ నిఃశ్రేయ స సిద్ధి స ధర్మః" లోకము మరియు పరలోకముల సమన్వయమే ధర్మ తత్వము. ఇదే జీవన మార్గము. ఈ విషయము ఇంకా స్పష్ట ముగా అర్థమగుటకు ఒక దృష్టాంతము కథ కలదు. దానిని శ్రద్ధగా వినండి !

ఒక గ్రామములో ఒక గృడ్డివాడు మరియు ఒక కుంటి వాడు ఉండెవారు. ఒకసారి ఆ గ్రామము అగ్నితో తగులబడి పోవుచున్నది. గ్రామములోని వారందరు ప్రాణ భయముతో పారి పోవుచుండిరి. ఈ కుంటివానికి, గుడ్డివానికి సహాయముచేసేవారు ఎవరు లేక దుఃఖించు చుండిరి. అగ్ని జ్వాలలు సమీపమునకు చేరు చుండెను. వారికి ఈ దుర్ఘటన నుండి తప్పించు కొనుటకు ఏమి మార్గము కనబడ లేదు. ఆ సమయములో ఒక ఆర్యుడు వారి ఆవేదను గ్రహించి, వారి వద్దకు వెళ్ళి మీరు భయపడ వద్దు. ఇందుకు మీకు ఒక ఉపాయము నేను చెప్పెదనని చెప్పి ఓదార్చెను. సోదరులారా ! మీకు మరెవ్వరి సహాయము అవసరము లేదు. కండ్లు కనబడని గుడ్డివానికి కాళ్లు బాగానే ఉన్నవి. కాళ్లు లేని వికలాంగునికి కండ్లు బాగానే ఉన్నవి. గుడ్డి వానిపై కుంటివాడు కూర్చొని మార్గ దర్శనము చేసినచో మీ ఉభయులకు లాభము కలుగునని బోధించెను. వారు అ అదే విధముగా సమన్వయ బుద్ధితో సంకటము నుండి తప్పించు కొనిరి.

మిత్రులారా ! ఈ అంధ-వికలాంగుల సమన్వయ న్యాయానుసారము, కేవలము భౌతిక వాదము గుడ్డిది మరియు కేవలము ఆధ్యాత్మిక వాదము కుంటిది. ఈ రెండింటి సహచరముతో, సమన్వయముతో, మానవులు భౌతిక సుఖము మరియు ఆధ్యాత్మిక శక్తి, శాంతిని పొందగలరు. కాని ఇచ్చట ఒక ముఖ్య విశేషమును గుర్తుంచు కొనవలసి యుండును. అదేమనగా గుడ్డివాని భుజముపై కుంటివానిని కూర్చొనబెట్టక, కుంటివాని భుజముపై గుడ్డివానిని కూర్చొన బెట్టినచో సంకటము మరింత పెరికి వినాశము సంభవించును. అనగా భౌతికవాద భుజముపై అధ్యాత్మికతాను ప్రతిష్టించ వలెను. అంతేకాని, అధ్యాత్మికతా భుజముపై భౌతికతను ప్రతిష్ఠించిన పురోగతి నష్ట భ్రష్టమగును. ఎల్లప్పుడు ఆధ్యాత్మి కతకు, భౌతిక సుఖముల కన్న అధిక ప్రాధాన్యత నీయవలెను. భౌతిక సుఖముల కొరకు ఎప్పుడు కూడ ఆత్మను అమ్ముకొనవద్దు. ఆత్మ పతనము చేసుకొన కూడదు. అన్న వస్త్రములు, గృహము మొదలగు భౌతిక వస్తువులు అవసరమే. మనము వాటిని సంపాదించుకొనవలెను. అందు కొరకు పూర్ణ పురుషార్థము చేయవలెను. వాటిని సమన్వయముగా, ఉపయోగించుకొని భౌతిక సుఖములను అనుభవించ వలెను. కాని ఆత్మ పతన మూల్యముపై కాదు. నైతికత ఆదర్శము లను త్యజించి, ఆత్మ హత్య చేసికొన కూడదు. మన శరీరము కొరకు లేదు. ఇది మరువ వద్దు. భోజనము మన కొరకు ఉన్నది. కాని భోజనము కొరకు మనము లేము. ఆత్మ యజమాని. బానిసకాదు. దానిని ఇంద్రియ రూప గుఱ్ఱము లకు బానిసను చేయవద్దు. శరీర కష్టములను సహించి కూడ, భౌతిక సుఖసాధనముల మూల్యమునుచెల్లించి కూడా మనము మన ఆత్మిక జీవనము యొక్క గౌరవమును మరియు నైతిక ఆదర్శములను రక్షించు కొనవలెను. ఇదే జీవన కళ.

మిత్రులారా ! మాతలారా ! ఏది దృష్యమాన మగుచున్నదో, అనగా కనబడుచున్నదో, అది ప్రకృతి. ఇది కూడా శాశ్వత సత్యమైనది. శ్రేష్ట మైనది. ఏది కనబడకున్నదో అనగా జీవాత్మ మరియు పరమాత్మ కూడ నిత్య సత్య శాశ్వతమైనవి.

ఈశ్వర-జీవ మరియు ప్రకృతి ఇవి మూడు సత్యశాశ్వత అనాది సత్తా కలిగిన పదార్థములని వేద శాస్త్రముల వలన తెలియు చున్నది. మనము ఎటు వెళ్లినను ఈ మూడింటి ప్రతీకలు దృష్య మాన మగును. ఇవి లేకుండ ఏ ఆట కొన సాగదు.

మనము ఒక విద్యాలయమునకు వెళ్లినామ నుకొండి ! అచ్చట ఉపాధ్యాయుడు-విద్యార్థి-పాఠశాల భవనము దృష్యమానమగును. అచ్చట ఉపాధ్యాయుడు మరియు విద్యార్థి వీరిరువురు చేతన సత్తా కలిగిన జ్ఞానవంతులు. విద్యాలయ భవనము, అందలి సామాగ్రి భౌతికము. మనము ఒక వ్యాపార మండీకి వెళ్లినామనుకొండి. అచ్చట ధాన్యపు రాసులు కొనెవాడు మరియు అమ్మెవాడు దర్శన మిత్తురు. ఇచ్చట కూడ రెండు చేతన సత్తా కలిగిన బుద్ధి జీవులు కొనెవాడు, అమ్మెవాడు మరియు ధాన్యము దృష్యమాన మగును. ఈ మూడింటిలో ఏ ఒక్కటి లేకున్నను వ్యాపారము కొనసాగదు. విశ్వ వ్యాప్తమైన ఈ క్రీడలో కూడాఈ మూడు పదార్థములు ఉన్నవి. ఇవి లేకుండా క్రీడ కొనసాగదు. 1) "ఇదం సర్వం" ఈ భౌతిక విశ్వజగత్, 2) దానిని అనుభవించు జీవాత్మ 3) "యఃప్రాణతో నిమిషతో మహిత్వైక ఇద రాజా, జగతో బభూవ" ఈ రెండింటి అధిష్ఠా తామహిమామయ పరమాత్మ

రండి ! మనము వీటి అస్తిత్వ విషయములో మరికొంత తెలుసుకొందాము. ఈ జ ప్రకృతితో తయారైన శరీరము. ఇంద్రియములు మరియు ఇతర భౌతికపదార్థములు మనకు ప్రత్యక్షమగు చున్నవి. ఇవి మిథ్య ఎట్లగును ? ఔను ! ఈ శరీరము ఇతర పదార్థములు భౌతికమైనవి. పరివర్తన శీలమైనవి క్షణభంగురమైనవే, కాని, అసత్-మిథ్యా (False) ఎంత మాత్రముకాదు. ఈ శరీరము ద్వారా సంసార జనుల వెంట జరుపు కొనబడుచున్న వ్యవహారములే కర్మఫల రూపములో మన భావి జీవన భూమికను నిర్మా ణము చేయును అప్పుడు ఇవి అసత్యమెట్లగును ? మీలో ఎవరైనా భౌతిక విజ్ఞాన శాస్త్ర విద్యార్థి ఉన్నాదా ? ఉంటె వారికితెలుసు (Matter is in due tidle) అనగా పదార్థము అవినశ్వరమై నది. ఇది యెప్పుడు నష్టము కాదు. లేకుండా పోదు. ఏ అణువు మరియు పరమాణువులతో ఏ వస్తువు తయారగునో, అది రూపాంతరము చెంది మరల అణుపరమాణు రూపములో ఉండును. ఇది నష్టమైతే లేకుండా పోదు. కావున ఈ ప్రకృతి సత్ పదార్థము. ఎప్పుడు శాశ్వతముగా ఉండును.

2) మన జీవాత్మ తనంతట తాను మనకు కనబడదు. కాని, దాని ఉనికిని అందరు గమనిం చెదరము. అనుభవము పొందెదరు.

సాధారణముగా మనముచెప్పుకొందుము. "నా శరీరము, నా తల, నా చేతులు, నా కాళ్లు, నా ముఖము, నా కాళ్లు, నా చెవులు, నా మాట యని." దీనివలన తెలియుచున్నదేమనగా నేను వేరు నా సంబంధించిన అవయవములు వేరని. "నేను" అనిచెప్పుకొనబడుచున్న పదార్థము ప్రత్యేకమైనదని తెలియుచున్నది. ఈ "నేను" సత్తా కలిగిన పదార్థము శరీరములో వ్యాపించి సంపూర్ణ శరీరమునకు గతిని, చేతనమును కలిగించుచున్నది. ఇదే, ఆ, చేతన సత్తా, ఇది జడశరీరమునకు గతిమానము కలిగించును. ఇది శరీరము నుండి వెడలి పోయిన తర్వాత శరీరము మరియు దాని అవయవములన్నియు అచేతనములై నిరర్థక మగును. బాల్యావస్థ యువావస్థ వృద్ధావస్థ వీటన్నిటి పరివర్తన శరీర మందే కలుగును. అనగా శరీరమునకే కలుగును. ఈ అవస్థలు ఆత్మకు కలుగవు. ఈ ఆత్మ అజర-అమర-అనాది-నిత్య-చేతన-శాశ్వతసత్తా కలిగిన పదార్థము. భగవద్గీతలో ఈ విధముగా చెప్పబడినది.

"న జాయతె మ్రియతే వాకదాచన, నాయం భూత్వా భవితా వాన్ భూయః । అజో నిత్యః శాశ్వతోఽయం పురాణోన హన్యతె హన్యమానె శరీర ॥"

"వాసాంసి జీర్ణాని యథా విహాయ నవాని గృహణాతిన రోపరాణి తథా శరీరాని విహాయ జీర్ణాన న్యాని సంయాతినవాని దేహి ॥" అనగా మనుష్యులు ఎట్లయితె పాత వస్త్రములను త్యజించి క్రొత్త వస్త్రములను ధరింతురో, అదే విధముగా, ఆత్మపాత శరీర రూప వస్త్రమును త్యజించి క్రొత్త శరీరమును పొందును. ఈ విధముగ ఆత్మ సత్తాను గురించి కొంత తెలిసి కొన్నాము.

श्रद्धांजलि

आर्य समाज दयालबावली हैदराबाद के प्रधान

श्री जे.डी. इंदर सिंह जी का निधन

श्री जे.डी.इंदर सिंह (सुपुत्र स्व. देवी सिंह स्व. सेनानी) प्रधान आर्य समाज दयालबावली हैदराबाद का ७२ वर्ष की आयु में दि. २३-३-२१ को देहावसान हो गया। वे पंडित सोहनलाल वानप्रस्थी स्वतन्त्रता सेनानी के प्रिय शिष्य थे। वे पंडित जी के अंतिम क्षण तक पूरी तन्मयता व निष्ठा के साथ उनकी सेवा की। पंडित जी के जीवन से प्रभावित होकैर आर्य समाज से जुड़े। इनको आर्य समाज, राष्ट्रीय राजनीति के उतार चढाव, महापुरुषों की जीवनियों व घटनाओं की तथा इतिहास की अच्छी जानकारी थी। इनका बिछड़ना आर्य समाज की वह बड़ी क्षति है जिसकी पूर्ति अपूरणीय है। आर्य समाज इस क्षति को कभी नहीं भूल पाएगा। इनका अंतिम संस्कार वैदिक पद्धति से सभा उप-प्रधान पं. हरीकिशन जी वेदालंकार, पं. प्रियदत्त शास्त्री व अशोक कुमार श्रीवास्तव कोषाध्यक्ष सभा ने संपन्न करवाया। आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना, दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान कर दुःखी परिवार को कष्ट सहने का साहस दें।

-विठ्ठल राव आर्य प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

श्रद्धांजलि

बरेली निवासी

श्री राजेन्द्र कुमार अगरवाल जी का निधन

श्री राजेन्द्र कुमार अगरवाल जी का निधन दि. ३० मार्च २०२१ के दिन बरेली में हुआ। वे स्टेट बैंक में कार्य करते थे। सेवा निवृत होने के बाद पूर्ण रूप से आर्य समाज के लिए समर्पित हो कर कार्य करते रहे। वे आर्यसमाज का साहित्य लेकर सम्पूर्ण भारत भर भ्रमण करते रहे। समुचा उनका हैदराबाद के हर वर्ष होने वाले पुस्तक मेला में आना होता था। वृद्धावस्था में भी वे एक चपल कार्यकर्ता थे। आर्य समाज उनकी सेवाओं को सदैव याद रखेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना, दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान कर दुःखी परिवार को कष्ट सहने का साहस दें।

-विठ्ठल राव आर्य प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

श्रद्धांजलि

आर्य समाज, सुल्तान बाज़ार की प्रधाना श्रीमती जयलक्ष्मी देवी जी का निधन

आर्य समाज, सुल्तान बाज़ार की प्रधाना श्रीमती जयलक्ष्मी देवी जी का निधन दयानन्द नगर, मलकपेट स्थित निवास पर गत रविवार को हुआ। जयलक्ष्मी देवी जी लंबे समय से बीमार थीं। हैदराबाद में श्रीमती जयलक्ष्मी देवी आर्य समाज की पहली महिला प्रधान थीं। वे आर्य कन्या विद्यालय, सुल्तान बाज़ार के प्रधान के रूप में भी कार्य किया। आर्य समाज सुल्तान बाज़ार में जयलक्ष्मी देवी ने कई कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया।

वर्षों पहले वे आर्य समाज से प्रभावित होकर निडरता से श्री देवनाथ जी से अंतर्जातीय विवाह किया था। वे तमील भाषी व तमलिनाडु राज्य से थी। उस जमाने में जातीप्रथा के विरुद्ध उन्होंने एक क्रांतिकारी कदम उठाया था, जो कि सामाजिक ताने-बाने को देखते हुए एक जोखिम भरा कार्य था। इससे उनके साहस का परिचय दिखता है। उनमें अंत तक आर्य समाज के प्रति अटूट श्रद्धा थी। इस प्रकार जयलक्ष्मी देवी जी एक साहसी महिला कार्यकर्ता महिला थी। उनका निधन आर्य समाज के लिए एक बहुत बडी क्षति हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा परिजनों को कष्ट सहने का साहस प्रदान करें।

-विठ्ठल राव आर्य

प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ ఆధ్వర్యంలో

146వ ఆర్య సమాజ స్థాపన దినోత్సవము

తేది 11 ఏప్రిల్ 2021 ఆదివారము సా॥ 4.00 గం॥ల నుండి

స్థలము : పం. నరేంద్ర భవన్, రాజమొహల్లా, నారాయణగూడ, హైదరాబాద్

ఆర్య సమాజ స్థాపన దినోత్సవ సందర్భములో మహాత్మ నారాయణ స్వామి కృతియైన **"కర్తవ్య దర్పణ"** (హింది) మరియు డా॥ కిశోరిలాల్ వ్యాస్ గారు రచించిన **"యుగద్రష్ట"-స్వామి దయానంద సరస్వతి** (హింది) పుస్తకాల ఆవిష్కరణ గావింపబడును. ఈ కార్యక్రమానికి **ముఖ్య అతిథిగా : ఆచార్య ఆనంద ప్రకాశ్ గారు** విచ్చేయు చున్నారు. సమయానికి అందరూ రాగలరని ప్రార్థన.

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में

१४६वां आर्य समाज स्थापना दिवस

रविवार दिनांक 11 अप्रैल 2021 सायं 4.00 बजे से

स्थान : पं. नरेन्द्र भवन, राजमोहल्ला, नारायणगुडा, हैदराबाद

समाज की स्थापना के पूर्व सन्ध्या पर आर्य समाज का १९७वां आर्य समाज स्थापना दिवस दिनांक ११ अप्रैल २०२१ रविवार के दिन सायं ४-०० बजे मनाए जाने का निश्चय किया गया है । इस अवसर पर महात्मा नारायण स्वामी कृत **"कर्त्तव्य दर्पण"** तथा डॉ. किशोरी लाल व्यास कृत **"युगद्रष्टा"-स्वामी दयानन्द सरस्वती** पुस्तकों का लोकार्पण किया जाएगा । मुख्य अतिथि : आचार्य आनन्द प्रकाश जी रहेंगे। अधिक-अधिक संख्या में समय से भाग लेकर कार्यक्र को सफल बनाएं ।

विट्ठल राव आर्य प्रधान सभा	निवेदक	**वेंकट रघुरामुलु** मंत्री सभा

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ ఆధ్వర్యంలో

పురోహిత మరియు సిద్ధాంత ప్రశిక్షణ శిబిరము

తేది 24 ఏప్రిల్ 2021 నుండి 9 మే 2021 ఆదివారము వరకు

స్థలము : పం. నరేంద్ర భవన్, రాజమొహల్లా, నారాయణగూడ, హైదరాబాద్

వయస్సు 21 నుండి 50 సంవత్సరములు గల వారు ఈ శిబిరములో పాల్గొన వచ్చును. శిబిరములో పాల్గొనే వారు స్త్రీ, పురుషులు మరియు కుటుంబము గల వారు ఉండ వచ్చును. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఈ శిబరమును ప్రత్యేకంగా నిర్వహించుచున్నది కావున ఆసక్తి గలవారు ప్రతి వ్యక్తి రూ॥ 500/- సభ కార్యాలయంలో చెల్లించి తమ పేరును నమోదు చేసుకో గలరు. పేర్లను నమోదు చేసుకున్న వారు మాత్రమే శిబిరములో పాల్గొనుటకు అర్హులు. శిబిరంలో పాల్గొను వారు 15 రోజులు శిబిర స్థానంలోనే అనివార్యముగా ఉండవలసి ఉంటుంది. కావున అవసరమైన వస్తువులను తమ వెంట తెచ్చుకోగలరు.

శిబిర సంయోజకులు : **శ్రీ హరికిషన్ జీ వేదాంలంకార్,** ఉపప్రధాన్ సభ

ప్రశిక్షక ఆచార్యులు : **డా॥ వసుధా శాస్త్రీ గారు**
శ్రీ పం. అరవింద్ శాస్త్రీ గారు, ఆచార్య విశ్వశ్రవః గారు
ఆచార్య సుమేధ గారు, ఆచార్య ప్రియదత్త్ శాస్త్రీ గారు
ఆచార్య వేదమిత్ర గారు, ఆచార్య సత్యవ్రత్ గారు మరియు

ప్రాంతీయ, ఇతర ప్రాంత్రీయ మరియు జాతీయ ఆచార్యులు ప్రశిక్షణ ఇవ్వగలరు. శిబిరములో పాల్గొను వారు అనివార్యమైన వస్తువులతో తేది 24-4-2021 శనివారము సాయంత్రం 7-00 గం॥ల వరకు పం. నరేంద్ర భవన్, రాజమొహల్ల చేరుకోగలరు. ఇతర సమాచారం కొరకు సభ కార్యాలయమును మరియు ఆచార్య హరికిషన్ వేదాలంకార్ గారితో సంప్రదించగలరు.

భవదీయ

విఠల్ రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ	**హరికిషన్ వేదాలంకార్** సంయోజకులు	**వెంకట రఘురాములు** మంత్రి సభ

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

మహర్షి దయానంద మార్గ్, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్.

ఫోన్ : 040-24753827, 24756983, 66756707, 9703066001

Email : **aryavithalrao@gmail.com, aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com**

పెరుగుచున్న కరొన సందర్భంలో ప్రభుత్వము కఠోరమైన ఆదేశాలు జారి చేసినచో శిబిరము రద్దు కావచ్చును. శిబిరములో రావుటకు సిద్ధమౌతు సభ ద్వారా జారి చేయబడే సూచనలను కూడ గమనించగలరు.

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 03-04-2021 Registered-Reg. No. D/RNP/HD/783/2021-23 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్షపత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., LL.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone No. : 040-66758707, 24753827, Fax : 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ

To,

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में

पुरोहित व सिद्धांत प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 24 अप्रैल 2021 से 9 मई 2021 रविवार तक

स्थान : पं. नरेन्द्र भवन, राजमोहल्ला, नारायणगुडा, हैदराबाद

21 वर्ष से 50 वर्ष के आयु रखनेवाले महानुभाव (पुरुष व महिलाएं व परिवार सहित) जो वैदिक सिद्धांतों की जानकारी लेने में तथा पुरोहिताई के कार्य में आसक्ति रखते हों ऐसे महानुभाव प्रतिनिधि सभा के संयोजन में आयोजित सिद्धांत व पुरोहित प्रशिक्षण शिविर में भाग ले सकते है । भाग लेने वाले महानुभाव **रु. 500/-** सभा में जमा कर अपना नाम अंकित (रजिस्टर) करवा लें । पंजीकृत व्यक्ति ही शिविर में भाग ले सकते है । शिविर में भाग लेने वालों के लिए अनिवार्य होगा कि वे पूरे **15 दिन** इसी कार्य के लिए सुरक्षित रख लें ।

शिविर संयोजक : **श्री हरिकिशन जी वेदालंकार,** उपप्रधान सभा
प्रशिक्षक आचार्य : **डॉ. वसुधा शास्त्री जी**
श्री पं. अरविंद शास्त्री जी, आचार्य विश्वश्रवा जी
आचार्या सुमेधा जी, आचार्य प्रियदत्त शास्त्री जी
आचार्य वेदमित्र जी, आचार्य सत्यव्रत जी व

अन्य प्रांतीय तथा राष्ट्रीय आचार्य भी प्रशिक्षण देंगे । भाग लेने वाले शिविरार्थि अपना आवश्यक सामान अपने साथ लेते आएंगे । सभी शिवरार्थियों को **24-04-2021 शनिवार** सायं **7-00** बजे तक नरेन्द्र भवन पहूँचना अनिवार्य होगा । अन्य कोई भी सूचना प्राप्त करने के लिए सभा कार्यालय से या आचार्य हरिकिशन वेदालंकार जी से सम्पर्क करें ।

निवेदक

विठ्ठल राव आर्य	**हरिकिशन वेदालंकार**	**वेंकट रघुरामुलु**
प्रधान सभा	संयोजक	मंत्री सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.- तेलंगाना
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद दूरभाष : 040-24753827, 24756983, 66758707, 9703066001
Email : aryavithalrao@gmail.com, aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com

बढ़ते करोना के संदर्भ में सरकार निर्देशों का सख्ति से पालन करने का आदेश देती है तो शिविर स्थगित भी किया जा सकता है । शिविर में आने की तय्यारी करें व साथ ही सभा के द्वारा जारी किए जाने वाले अगले सूचनाओं की प्रतिक्षा करें ।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor :Sri Vithal Rao Arya • E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विठ्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र. -तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.